संजय की कलम से ..

योग मार्ग में विघ्न और निवारण

जैसे सांसारिक प्रेम में प्रेमिका और प्रेमी के मिलन में कई विघ्न आ खड़े होते हैं, वैसे ही आत्मा और परमात्मा के मिलन अथवा योग में भी अनेकानेक प्रकार के विघ्न आते हैं। एक दृष्टि से देखा जाये तो ये 'विघ्न' केवल विघ्न ही नहीं है बल्कि ईश्वरीय ज्ञान की परीक्षार्थ प्रश्न-पत्र हैं। जो जितना अधिक और जितने विकराल विघ्नों को पार करता है, वह उतना ही उच्च ज्ञानी और योगी है।

मनुष्य को जन्म-जन्मांतर से अपने देह का भान और अभिमान है। उसका मन बार-बार अपने देह के संबंधों की ओर भागता है क्योंकि उसे मोह-ममता की रस्सियाँ और नाम-रूप का आकर्षण खींचता है। अभी मनुष्य योगयुक्त होकर आनन्द का अनुभव करने ही लगता है और चाहता है कि बस इसी अशरीरी आत्मिक स्थिति का रस लेता रहूँ परंतु उसके मन को जो टेव पड़ी हुई है, वह उसे पुन: पुन: देह के संबंधों में से कभी बच्चे की, कभी माता की, कभी पति की, कभी किसी अन्य की लगन, याद आदि की ओर खींच कर ले जाती है।

योगाभ्यास के समय जब मनुष्य के सामने ऐसा विघ्न आता है तो अपने आत्मा रूपी दीपक को ईश्वरीय याद में जगता रखने के लिए उसमें ज्ञान रूपी घृत डालते रहना चाहिये। उसे ज्ञान-मंथन करते हुए यह सोचना चाहिए कि ''मैं तो देह से न्यारा हूँ, फिर ये नाते मुझ आत्मा को अब कैसे बाँध सकते हैं? मेरे मन की आँख के सामने संबंधियों के जो चित्र आ रहे हैं, ये भी तो देहों के चित्र हैं, देहों रूपी वस्त्रों को धारण करने वाले ये संबंधी भी तो वास्तव में ज्योतिबिन्दु आत्मायें ही हैं। अत: उनके साथ भी मेरा नाता तो वास्तव में आत्मिक नाता है और हम सभी का अविनाशी और सच्चा नाता तो एक परमपिता परमात्मा ही के साथ है। उस नाते से तो वे भी परमात्मा की संतान हैं, मैं भी परमपिता परमात्मा ही की संतान हूं। इससे भिन्न और जो भी नाते हैं, वे सभी तो क्षणभंगुर, विनाशी, प्रकृति के देहों पर आधारित हैं। उनसे उपराम होकर अब मुझे एक परमपिता परमात्मा ही की मधुर स्मृति में टिकना है, अब योगाभ्यास के समय उन दैहिक संबंधों को याद करने का तो कोई प्रयोजन ही नहीं है।'' अत: योगाभ्यास करते समय जब कभी किसी संबंधी का चित्र मन रूपी पट पर आये तो मनुष्य को चाहिये कि उसके स्थान पर बिन्दु रूप आत्मा का चित्र लाकर उसे परमपिता परमात्मा की संतान निश्चय करके पुन: अपने मन को स्थानांतरित करके परमपिता परमात्मा ही की ओर ले जाये और पुन: ईश्वरीय स्मृति का आनन्द ले। ❖

अमृत-सूची

◈ सुख दो, सुख लो (सम्पादकीय) 4
◈ तुम शक्ति हो..(कविता) 6
◈ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 7
◈ 'पत्र' संपादक के नाम 9
◈ विदेशी भाई-बहनों के प्रश्न ...10
◈ विदेश में ईश्वरीय सेवा 12
◈ किसान की शान 15
◈ विकल अंग और विकल मन .16
◈ मन जीते जगतजीत...........17
◈ समय की पहचान 20
◈ दिल पर लगी अमिट छाप.... 22
◈ अंत मति सो गति 23
◈ सरलता......................24
◈ ईश्वरीय शासन की अनुभूति. 27
◈ परमात्म परिणय 28
◈ महासम्मेलन से उभरे 29
◈ सचित्र सेवा समाचार......... 30
◈ अनोखा विश्व परिवार 32
◈ शिव स्मृति में है सुरक्षा 33
◈ जीवन परिवर्तन 34
◈ बाबा की आँखें (कविता) 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..

सुख दो, सुख लो

परमपिता परमात्मा शिव पिछले 75 वर्षों से, मानवता के कल्याण अर्थ जो महावाक्य उच्चारण करते आये हैं, उनमें से सर्वप्रमुख महावाक्य कहिए या महावाक्यों का सार कहिये, यह है कि कभी किसी को दुख नहीं देना है। भगवान कहते हैं, दुख का परिणाम दुख है, दुख देने पर हम दुख पाने के लिए बंध जाते हैं, इसलिए संतों ने भी कहा है,

समस्त वेद-पुराण में
बात कही हैं दोय,
दुख देवत दुख होत है,
सुख देवत सुख होय।

क्यों देते हैं हम दुख?

हम किसी को दुख क्यों दे देते हैं, यह जानते हुए भी कि यह गलत कर्म है, फिर भी हमसे क्यों हो जाता है? कारण यह है कि पहले हम दुख ले लेते हैं। जो लेंगे, जो अपने अंदर भरेंगे वह बिना प्रयास के दिया भी जायेगा। जो इनपुट होगा, वही आउटपुट होगा। यदि चक्की में नमक पीसेंगे तो नमक बाहर निकलेगा। चीनी पीसेंगे तो चीनी बाहर निकलेगी। मटके में जो भरा होगा, वही रिस-रिस कर निकलेगा। किसी घटना को, व्यक्ति के व्यवहार को, परिस्थिति को, प्रकृति के परिवर्तन को या अविनाशी **चलते हुए सृष्टि-ड्रामा के किसी दृश्य को देख-सुनकर यदि हम दुखी होते हैं और अंदर में उस दुख का स्मरण, चिंतन करते रहते हैं तो मानो अंदर में दुख को पीस रहे हैं और उसका रस हमारे नेत्रों से, वाणी से और हाव-भाव से बाहर अवश्य निकलेगा। जो भी हमारे संपर्क में आयेगा, उसे उस कड़वे रस का स्वाद ना चाहते हुए भी चखना पड़ेगा। इसलिए दुख देना नहीं है, इस मंत्र से पहले, यह महामंत्र पक्का करना है कि दुख लेना नहीं है।**

करने वाला पाएगा,
तुम उदास क्यों?

कबीरदास की झोंपड़ी के पास एक कसाई अपना धंधा करता था। पास होने के कारण कबीर जी की नजर उस पर ना चाहते भी पड़ती थी और वह मन ही मन दुखी होता था, सोचता था, कैसा निर्दयी आदमी है, कितना पाप करता है..आदि-आदि। एक दिन उसने अपने मन को समझाया, तुम क्यों दुखी होते हो, करता वो है, तुम्हें उसके कर्म का चिन्तन करने की क्या जरूरत है, करने वाला फल पायेगा, तुमको करना नहीं, फल पाना नहीं फिर उदासी क्यों? फिर उसने दोहा लिख डाला,

कबीरा तेरी झोंपड़ी
गल कटियन के पास,
करणगे सो भरणगे
तू क्यों भया उदास।

सुख का चिन्तन करना है

जैसे कबीर ने अपने मन को समझा लिया, ऐसे ही हमें भी अपने मन को समझा लेना है। सोचने की बात यह भी तो है कि हम दुनिया को तो नहीं बदल सकते पर अपने मन को तो बदल सकते हैं। दुनिया को तो नहीं समझा सकते, अपने मन को तो समझा सकते हैं ना। पराई चीज़ों पर, दूसरे लोगों पर, प्रकृति पर, दुर्घटना पर, अनचाही घटना पर, अचानक प्रकट होने वाली परिस्थितियों पर, किसी के स्वभाव पर हमारा कोई ज़ोर नहीं चल सकता। वे तो जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे, समय आने पर हो सकता है वो बदल भी जायें पर इस समय तो हमारे मन पर ही हमारा ज़ोर चल सकता है ना। जैसे मदारी का तमाशा देखते बच्चे का हाथ पकड़ कर आप खींच ले चलते हो, मदारी को तमाशा दिखाने से थोड़े ही रोकते हो। इसी प्रकार संसार रूपी तमाशे के दुख-तकलीफों में उलझे मन को भी तो आप खींच कर परमात्मा पिता के पास ले जा सकते हो। दुख के उफनते दरिया से हटाकर सुख के सागर के पास ले जा सकते हो। **दुनिया में कितना दुख है, इस चिन्तन के बदले यह सोच सकते हो कि भगवान कितना बड़ा सुख का सागर है। दुख**

का चिन्तन भीतर भरने के बजाय ईश्वर पिता से मिलने वाला सुख भीतर भर सकते हो। बार-बार जिस पर विचार किया जाता है, वह विषयवस्तु उन्नत होती है अतः हमारे चिन्तन की विषयवस्तु यह होनी चाहिए कि सुख लेना है, सुखी रहना है, सुख को बढ़ाना है, सुख के सागर में सहयोग की बूंदें डालनी हैं, दुख की स्मृतियों को, बातों को, दृश्यों को समाप्त कर देना है।

ऊपर हमने दो बातें सीखी और दोनों में ही 'न' करने की हिदायत है। दुख 'न' लेना है। दुख 'न' देना है तो फिर करना क्या है? यह नहीं करना है तो कुछ अन्य करने की सलाह तो होनी चाहिए ना! इसके लिए भगवान कहते हैं, दुख को सुख में बदलो और सबको सुख दो।

दुख को बदलिए सुख में

आज के समय में कबाड़ी का धंधा खूब फल-फूल रहा है। इस धंधे में लोग करोड़पति हो रहे हैं। इस धंधे में व्यर्थ चीज़ों को एकत्रित कर उन्हें नया रूप दे दिया जाता है और संसार में स्थूल कबाड़ की तो कमी है ही नहीं। इसी प्रकार, दुख भी सूक्ष्म कबाड़ ही तो है और यह भी अति में है, गली-गली में है, हर मोहल्ले और दुनिया के हर कोने में है। यदि हम भी इस दुख रूपी कबाड़ के परिवर्तन के धंधे में लग जायें तो आध्यात्मिक ऊँचाइयों को छू सकते हैं। दुनिया में ऐसे चोर-उचक्के, समाजविरोधी लोग हैं जो किसी का जेवर, किसी का संबंधी और किसी का मान हरण कर लेते हैं पर हमें तो लोगों के भीतर दबा दुख हरण करना है और उसे सुख में बदल देना है।

क्या दुख को सुख में बदलना, इस लेख को लिखने की तरह ही सरल है। हाँ है, यदि हम दृढ़ संकल्प कर लें तो। शान्तिवन में एक बार एक अग्निशमन प्रशिक्षण देने वाला भाई आया था। वह भारत भर में और भारत से बाहर भी प्रशिक्षण देने जाता था। हमने पूछा, आप इस क्षेत्र में कैसे आये? उसने कहा, जब मैं छोटा था, मेरे घर के सभी लोग एक आग हादसे में जिन्दा जल गये। मैं अकेला बचा था। मुझ पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा पर मैंने दुखी होकर रोने के बजाय ऐसे हादसों से लोगों को जागरूक करने की ठान ली। आज मुझे कितने ही लोगों के पत्र, फोन आते हैं कि आपने अग्निशमन की जो विधि सिखाई, उसके फलस्वरूप हम जान-माल के बड़े-बड़े हादसों को टालने में समर्थ हो गये। उनके धन्यवाद की बातें सुनकर मुझे बहुत सुख मिलता है। इस प्रकार मैंने अपने दुख को सुख में बदल लिया।

एक बहन को उसके डॉक्टर पति ने पचास वर्ष की आयु में तलाक दे दिया। किसी नर्स के आकर्षण में उन्होंने ऐसा किया था। महिला के दो बच्चे शादी की उम्र में थे। वह न रोई, न किसी को दोष दिया। बालिग बच्चों को घर की ज़िम्मेदारी देकर, उनकी स्वीकृति लेकर छत्तीसगढ़ के बस्तर के आदिवासी क्षेत्रों में जागृति लाने के लिए एक महिला समूह की नेत्री बन गई। इस समूह ने उन आदिवासी महिलाओं को सिलाई, पढ़ाई से लेकर अन्य घरेलू कार्यों का प्रशिक्षण दिया और शहरी लोगों द्वारा उनका आर्थिक शोषण रोकने के लिए भी उन्हें सावधान किया। इस कार्य के लिए उन्हें भारी जनसमर्थन, सहयोग और प्रशंसा मिली। आज वे पति की तरफ से आई उस विपत्ति को विपत्ति ना मान जीवन को अधिक सार्थक और अधिक उपयोगी बनाने की एक सीढ़ी मानती हैं।

ऐसे कितने ही और भी उदाहरण लिये जा सकते हैं। संसार दुखों का सागर है। इसमें आप भी अपने दुखों की धारायें छोड़ रहे हैं तो आप समाधान तो नहीं हुए ना। आप इसे सुखाइये, इसे घटाइये और यह तभी होगा जब आप अपने और दूसरे के दुखों को सुख में बदलने की ठान लेंगे।

मैं अपना मूल स्वभाव न बदलूँ

भगवान यह भी कहते हैं, सुखदाई बनो, मनसा-वाचा-कर्मणा सुख दो, हर आत्मा को सुखी बनाओ। इसका सरल उपाय है, सदा अपनी सुख

स्वरूप स्थिति में स्थित रहना। जैसे आत्मा शांतस्वरूप, प्रेमस्वरूप, आनंदस्वरूप है, वैसे ही आत्मा सुख स्वरूप है। सुख आत्मा का धर्म है। **सुख आत्मा के साथ-साथ है, जैसे चंद्रमा जहाँ रहे, चाँदनी साथ रहेगी। सागर जहाँ हो, शीतलता साथ रहेगी, धरती के साथ स्थिरता रहेगी, ऐसे ही सुख आत्मा के साथ-साथ है। इसे कहीं बाहर से प्राप्त नहीं करना। बाहर से लेंगे तो छूट भी जायेगा। जिसे हम बनायेंगे, वह बिगड़ जायेगा। जिसे हम ढूँढ़ेंगे, वह पुनः खो जायेगा पर आत्मिक सुख आत्मा की अपनी चीज़ है, आत्मा की तरह ही अविनाशी है।** इसके लिए बस इतना याद रखना है कि मैं आत्मा अविनाशी सुख स्वरूप हूँ। किसी भी हालत में, कोई भी मेरा सुख छीन नहीं सकता है। मैं अपना सुख स्वरूप स्वभाव किसी भी व्यक्ति, परिस्थिति से प्रभावित हो दुख स्वरूप बनने नहीं दूँगा। अगणित वर्षों से सूर्य ने अपना स्वभाव नहीं बदला, चंद्रमा ने भी नहीं फिर मैं अपना स्वभाव क्यों बदलूँ?

भगवान से मिला है 'सुखी भव' का वरदान

मैं सुख के सागर परमात्मा पिता की सुख स्वरूप संतान हूँ। परमात्मा पिता से मुझे अविनाशी सुख का वर्सा मिला है। मैं अपने इस वर्से को स्नेहपूर्वक संभाले हुए हूँ। किसी भी हालत में इसे छिनने नहीं दूँगा। परमात्मा पिता की सुख की किरणें मुझे अपनी बाँहों में समाये हैं। मैं अतीन्द्रिय सुख के झूले में हूँ। जैसे रसगुल्ला चाशनी में डूबा रहता है, मैं आत्मा सुख के सागर में डूबा हुआ हूँ। सुख स्वरूप होकर रहना मेरा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। परमात्मा पिता ने मुझे सदा सुखी भव का वरदान दिया है जिसे कोई छीन नहीं सकता।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

तुम शक्ति हो, प्रकाश हो

ब्रह्माकुमार विवेक, माउंट आबू

तुम शक्ति हो, प्रकाश हो, लो मान,
अब से बना लो, अपनी नई पहचान।
न रक्त, चमड़ा और न हड्डी, तुम हो चेतना,
शरीर से महसूस करते हो सुख और वेदना,
शरीर एक ज़रिया है दरम्यान,
तुम शक्ति हो..........................

जनम का साथी है, यह शरीर तुम्हारा,
इसे पहनकर, तुम खेलते हो खेल सारा,
कोई कहलाए गाँधी, कोई सिकन्दर महान,
तुम शक्ति हो..........................

तन तो कार्य करने को, तुम्हारा यंत्र है,
तुम शक्ति हो, प्रकाश हो, यह एक मंत्र है,
मिलेगी इसी से आनन्द की खान,
तुम शक्ति हो..........................

रूप तुम्हारा अति सूक्ष्म, शक्तियाँ अपार,
गुण तुम्हारे शान्ति, प्रेम, दया और उपकार,
इन्हें ही बना लो अपना जहान,
तुम शक्ति हो..........................

भृकुटी में, इस शरीर में रहते हो,
आँखों से देखते, मुख से कहते हो,
तुम्हारे बिना न कुछ कह सकती जुबान,
तुम शक्ति हो..........................

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

आदरणीया दादी जानकी जी के द्वारा गॉडलीवुड स्टूडियो का 16 अक्टूबर को उद्‌घाटन हुआ और बाद में उसके 'सी' स्टूडियो में पहले टॉक शो का आयोजन हुआ जिसमें रमेश भाई ने पहले दादी जानकी से तथा बाद में न्यूयार्क की मोहिनी बहन से प्रश्न पूछे। प्रस्तुत हैं पाठकवृंद के लाभार्थ इस टॉक शो के संक्षिप्त प्रश्नोत्तर..

रमेश भाई – इस स्टूडियो का आपने उद्‌घाटन किया, इसके पीछे शिवबाबा की क्या योजना है और इस द्वारा भविष्य में किस तरह की सेवाओं की आप अपेक्षा रखते हैं?

जानकी दादी जी – सबकी शुभ भावना से जो यह स्टूडियो बना है, बहुत सेवा कर रहा है और करेगा। सारे विश्व को क्लीयर ऐसा अनुभव हो कि भुलाना चाहें तो भी भूले नहीं, बाकी भुलाने वाली बातों को याद न करें। दुनिया में मनुष्य कई बातें भुला नहीं सकते। हम विश्व के कोने-कोने को यह दृश्य दिखा सकते हैं कि अब समय यह है और इसलिए क्या करने का है। हरेक की आँख खुल जाये और बुद्धि अच्छी बन जाये, यह कार्य स्टूडियो के द्वारा होगा।

रमेश भाई – स्टूडियो का संचालन करने वालों को स्टूडियो की सेवाओं के संबंध में क्या भविष्य योजना बनानी चाहिए?

जानकी दादी जी – सब देशों के दैवी परिवार के यहाँ हाज़िर हैं। वंडर है, ऐसे समय पर उद्‌घाटन हो रहा है जो सारे देशों के सभी बच्चे हाज़िर हैं। अभी वो देखेंगे कि कैसे सेवार्थ बाबा ने यह साधन दिया है, खूब सेवा करेगा। प्लान बनाने की बात नहीं है, बना हुआ है। मुझे पता थोड़े ही था, ऐसा स्टूडियो बनेगा बाबा की सेवार्थ। कितना सुंदर सीन है और कितना सुंदर यह स्टूडियो है।

रमेश भाई – आपके हिसाब से भारत की ईश्वरीय सेवाओं को बढ़ाने में स्टूडियो का क्या योगदान रहेगा?

जानकी दादी जी – अहम भाव, वहम भाव थोड़ा भारत में ज्यादा है, वह मिटाने का काम यहाँ से होगा। ब्रह्माकुमारीज़ की क्लीयर पिक्चर नहीं है। मुझे एक भाई ने पूछा, यह गहराई का ज्ञान है। स्पष्ट समझ में आये, देखने में आये, उसके लिए क्या साधना करें। हमारे से बाबा ने इतनी साधना कराई है। इस साधन द्वारा अहम और वहम खत्म हो जायेगा। क्या है, कैसा है, अभी तक वहम है, आंखें खुली नहीं हैं। जैसे हमारी आंखें भगवान ने खोलीं, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनाया, मेरी भावना है, सब ऐसे त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बन जायें। हमारा सारा भारत स्वर्ग बन जाये तो विश्व में सतयुग आ जाये।

रमेश भाई – आपके हिसाब से स्टूडियो की सेवाओं को आगे बढ़ाकर, उसे ईश्वरीय सेवा का मुख्य अंग बनाकर विश्व में प्रसिद्ध करने के लिए भारत के भाई-बहनों द्वारा क्या प्रयास होना चाहिए?

जानकी दादी जी – सारे भारत के भाई-बहनें स्टूडियो की सफलता के लिए पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। अभी तक रोज़ाना 1.5 करोड़ लोग बाबा का ज्ञान टेलीविजन द्वारा सुनते हैं, हमने लक्ष्य रखा है कि 15 करोड़ लोग बाबा का ज्ञान रोज़ टेलीविजन द्वारा सुन सकें। आपका, हमारा काम है योग लगाना, सबका काम है सहयोग देना। सारे विश्व में, भारत में इतनी सेवायें

हुई हैं योग और सहयोग से। भाइयों के संकल्प में दृढ़ता बहुत है और हमारा स्नेह भरा सहयोग है। इन दो गुणों के आधार पर, जो कहेंगे, करके दिखायेंगे, आपने तो करके दिखाया है।

रमेश भाई – हमने नहीं करके दिखाया, बाबा ने निमित्त बनाया और आप दादियों ने शुभभावना रखकर हर बात में सहयोग दिया।

जानकी दादी जी – यह ईश्वर के पास गुप्त प्लान था, हमने उसके प्लान को प्रेक्टिकल देखा। पहले हम बहनों को निमित्त बनाया। आज भी बाबा ने कहा, शेर पर कोई सवारी नहीं है पर काम करने में शेरनियां हो, शक्तियाँ हो। आप भाई निमित्त बने हुए हो। पांडव हो। पांडव शक्ति सेना की कमाल है। बाबा ने भाग्य दिया है, आप सेवा करो, बाबा करा रहा है।

रमेश भाई – (मोहिनी बहन से) विदेश की ईश्वरीय सेवा में गॉडलीवुड स्टूडियो का क्या योगदान रहेगा? विदेश के भाई-बहनों की इससे क्या आशायें हैं?

मोहिनी बहन – मैं सर्वप्रथम आज के उद्घाटन के लिए आपको बहुत-बहुत मुबारक देती हूँ, ना केवल आपको बल्कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए भी यह बहुत बड़ा कदम है। पहले कल्पना थी, फिर दृढ़ संकल्प हुआ और आज वो प्रेक्टिकल में हुआ, इसके लिए बहुत-बहुत मुबारक। काफी समय से जैसा आपने बताया, दो वर्ष से स्टूडियो का निर्माण हो रहा है, तब से समय प्रति समय संदेश आता रहा और मैं समझती हूँ, सभी देशों में बहुत उमंग-उत्साह है। कई कारण हैं, एक तो यह कि हम सबका यहाँ पर आना होता है। पहले हम रिकॉर्डिंग भिन्न-भिन्न स्थानों पर करते थे। विदेश में भी हमने छोटे-छोटे स्टूडियो एक-दो कैमरे रखकर बनाये हैं। हमें पता चला गॉडलीवुड स्टूडियो के बारे में। पहले तो नाम कितना सुंदर है। हालीवुड, बालीवुड, गॉडलीवुड, नाम कितना सुंदर है। नाम में भी बहुत आकर्षण है और मुझे ऐसा लगता है कि सभी देशों में जो भी आर्टिस्ट हैं, जो भी प्रोजेक्ट बनायेंगे, वो तो चलेगा ही। यह नाम बहुत फेमस होगा, यह नाम पहले किसी ने नहीं सुना, बहुत यूनिक नाम है। हम सबका पूरा सहयोग रहेगा। गॉडलीवुड स्टूडियो वर्ल्ड फेमस हो, नंबर वन हो, इसके लिए विदेश के बहन-भाई काफी प्रयास करेंगे। वहाँ के मीडिया में ईस्ट और वेस्ट मिलकर कुछ ऐसे कार्यक्रम रिकॉर्ड करेंगे जिससे मैसेज फैलायेंगे। आशा रखती हूँ कि इसके लिए हम कुछ शार्टटर्म या लांगटर्म प्लैन बनायें। इसके लिए जिस समय पर, जब भी आवश्यकता होगी, हम पूरा सहयोग देंगे।

रमेश भाई – गॉडलीवुड स्टूडियो द्वारा भारत और विदेश दोनों मिलकर बाबा का नाम बहुत अच्छी रीति से बाला कर सकते हैं। अभी ए, बी और सी तीनों स्टूडियो का कार्य आरंभ हो जायेगा। हमने 'एक मुलाकात' कार्यक्रम रिकॉर्ड किया है, जिसमें वीआईपी से इंटरव्यू लेते हैं और वे विश्व विद्यालय के बारे में अपने अनुभव बताते हैं। टीसीरीज के मालिक कृष्ण कुमार ने भी यह कहा कि ऐसे एचडी वर्सन्स वाले स्टूडियो तो हमारे पास भी नहीं हैं। इस स्टूडियो से बने कार्यक्रम को हम आस्था, साधना, जी टीवी, पीस ऑफ माइंड और अन्य चैनल्स पर दे सकते हैं। हम चाहते हैं कि भारत तथा दुनिया की अन्य भाषाओं में भी, ईटीवी के क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रमों की तरह बाबा का कार्यक्रम भी आना चाहिए।

मोहिनी बहन – मैं आपको आश्वासन देती हूँ, हम गैरंटी करते हैं कि ऐसे प्रेक्टिकल में होगा।

दादी जानकी – भाग्य से ऐसा चांस मिलता है। यह सेवा नहीं है, ईश्वरीय स्नेह का सबूत है। दुनिया देख रही है, स्नेह और सहयोग की यह कमाल है।

मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही पड़े तो कम से कम बोलो। एक शब्द से चले तो दो नहीं बोलो।

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका आधुनिक जीवन की विनाशकारी, असंयमी वृत्तियों में अमृतदायी दवा का काम करती है। जीवन का सच्चा अर्थ बताकर बाबा के सच्चे प्यार का रास्ता बताती है। अगस्त माह के लेख 'श्रीकृष्ण का सर्व महान जीवन', 'सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य से मिलेगी सच्ची स्वतंत्रता', 'ज़िन्दगी का केक' – बड़े रोचक और प्रेरणादायी हैं। विश्ववासियों से अनुरोध है कि इसका प्रचार और प्रसार बढ़ाकर, विश्व बंधुत्व की भावना जगाएँ ताकि वातावरण प्रेम, आनंद और शांति से महक उठे।

– लक्ष्मीकांत महादुले, नागपुर

सितंबर अंक में संपादकीय 'संकल्प बल' और 'जीवघात के बाद भी जीवन है' पढ़कर बहुत ही अच्छा महसूस हुआ। पहले लेख में आत्मा का सभी भौतिक चीज़ों से भिन्न होना बहुत अच्छे ढंग से समझाया गया है। वास्तव में आत्मा को स्थूल नेत्रों द्वारा न देख पाना ही अच्छा है वर्ना साइंस न जाने क्या कर बैठे। दूसरे लेख में बहुत अच्छे तरीके से समझाया है कि आत्मा जीवघात करने के बाद पश्चाताप करती है और उसकी कोई सुनने वाला नहीं रहता है। ज्ञानामृत के अध्ययन से तो ऐसा लगता है कि यह मुझे पुरुषार्थ की दौड़ी पहनने के लिए आमंत्रित कर रही है।

– ब्र.कु.विनोद, जयपुर

सितंबर अंक में प्रकाशित 'हृदय रोग के कारण एवं निवारण' लेख अनोखा लगा। युवा पीढ़ी अधिकतर हृदय रोग से ग्रसित है किंतु उन्हें कारण नहीं मालूम। कारण बिना कार्य की उत्पत्ति नहीं होती। कारण और निवारण दोनों की स्पष्टता लेख से मिली है। लेखक को बहुत-बहुत शुभकामना!

– अशोक चेतन, सहरसा (बिहार)

ब्रह्माकुमार रमेश शाह द्वारा लिखित लेख 'ईश्वरीय सेवा में नृत्य नाटिकाओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भूमिका' पढ़ा जिससे यज्ञ संबंधी काफी रोचक जानकारी प्राप्त हुई। यह लेख पुराने तथा नये भाई-बहनों के लिए काफी ज्ञानवर्द्धक है। नृत्य नाटिकाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ ज्ञान-वर्षा भी होती रहे तो मनोरंजन के साथ ज्ञान को जीवन में उतारना भी सहज लगता है।

– ब्र.कु. प्रीति,
मालवीय नगर, जयपुर

सितंबर अंक का लेख 'जीवघात के बाद भी जीवन है' सर्वोत्तम एवं महत्वपूर्ण लगा। आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है, हत्या या घात शरीर (जीव) का ही होता है। शाश्वत आत्मा शरीर से निकलकर नया पार्ट प्ले करती है तो संस्कार एवं कर्मबंधन उसके साथ जाते हैं जो अगले जन्म में भोगने पड़ते हैं। अतः विपरीत परिस्थितियों से बचने के लिए सामना करने की शक्ति तथा समाने की शक्ति से मन को भरपूर करें। सकारात्मक विचार जागृत करें जिससे मनोबल बढ़े और जीवघात जैसी भावनायें मन में जागृत न हों।

– भंवरलाल गुर्जर (अध्यापक),
सांभर लेक, जयपुर

परम सम्माननीया दादी जानकी जी के उत्तर प्रतिमाह हमें रूहानी वरदानों की तरह मिलते हैं जो जीवन को दिव्यता से परिपूर्ण करने वाले हैं। 'एक कलम केन्या से' एक सजीव, चित्रात्मकता का दिग्दर्शन कराने वाला आलेख है। उच्च साहित्यिक, स्तरीय, सार्थक अभिव्यक्ति से पूर्ण है। असीम आनंददायी और गवेषणात्मक तथ्यों से अवगत कराने वाला, मानवीय सद्व्यवहार, जीवनमूल्यों व वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को फलीभूत करने वाला तथा बार-बार पठनीय, प्रेरणादायी लेख है। ब्रह्माकुमार डॉ.रामश्लोक जी का 'गीता सार' नाटक बहुत अच्छा लगा।

– ब्र.कु.श्रीधर, कोदरिया (महू)

विदेशी भाई-बहनों के प्रश्न, दादी हृदयमोहिनी के उत्तर

प्रश्न:- आप दादियों का स्नेह देख हम सबको बाबा के नजदीक आने का भाग्य मिलता है। हम क्या तरीका अपनायें जो हम यह प्यार एक दूसरे को दे सकें, ले सकें?

उत्तर:- हम लोगों का आपस में भी प्यार है और आपसे भी बहुत प्यार है। बाबा प्यार का सागर है, हम लोगों ने प्रैक्टिकल में शिवबाबा और ब्रह्मा-बाबा के प्यार का अनुभव किया है। हम सबको बापदादा ने यही शिक्षा दी कि बच्चे आप लोगों के ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। विश्व में भिन्न-भिन्न धर्म, जाति, रंग हैं, संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और रहेंगे लेकिन तुम्हारी जिम्मेवारी है सबको मिलाके एक जैसा बाप-समान बनाना। बाबा ने आते ही हम सबको यह कहा कि तुम सब बच्चे भिन्न-भिन्न वृक्ष की, भिन्न-भिन्न शाखायें आई हो लेकिन मेरे को ही तुम बच्चों को एक चन्दन का वृक्ष बनाना है। तो हमको बाबा ने पहले ही यह एकता का पाठ पक्का कराया है। यह एकता ही विश्व का परिवर्तन करेगी। तो बाबा के ये शब्द बचपन से ही हम लोगों के कानों में सदा गूंजते हैं कि एक के हैं, एक होके रहना है और एकता हमारा स्वधर्म है।

शुरू से ही हम दादियों का आपस में बहुत स्नेह रहा है। अपने पुरुषार्थ की मेहनत नहीं लेकिन बाबा के दिल की दुआओं से लिफ्ट के रूप में मदद मिलती रही है। उसी आधार से हम आगे बढ़े हैं। सेवा में अलग होते हुए भी हम यह पाठ कभी भी नहीं भूले हैं कि हम एक हैं। संस्कार और विचार तो सबके एक जैसे नहीं हो सकते हैं, थोड़ा फर्क तो रहता ही है लेकिन हम उस भिन्नता में नहीं जाते। ऐसे कोई भी नहीं कहते कि मेरा विचार ही ठीक है। हमारे सामने बाबा और बाबा की सेवा है। बाबा सामने आने से विचार भिन्न होते भी आपस में डिस्कस नहीं चलेगी, जिस कारण से टाइम वेस्ट नहीं होता। विचारों की लेन-देन करते, रिगार्ड देके जो मैजारिटी फाइनल हो जाता है उसमें हम फिर हाँ जी, हाँ जी करते हैं। इस प्रकार विचारों की, संस्कारों की भिन्नता होते भी हम सब मन-बुद्धि से एक हैं। बाबा को सामने रखने से एक हो जाते हैं और जहाँ एकता है, संगठन है वहाँ सफलता है ही है।

प्रश्न:- बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए आपकी क्या प्रेरणायें हैं?

उत्तर:- हर एक बच्चे का बाबा से प्यार तो है ही। बाबा के प्यार में तो सभी पास हो। आजकल हम देखते हैं कि जो नये भाई-बहनें आते हैं उनका बाबा से प्यार बहुत जल्दी हो जाता है और दिल से होता है। बाबा से प्यार है तब तो ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी बने हैं

और चल रहे हैं। तो जब बाबा से प्यार है तो जिससे भी प्यार होता है उसके प्रति हम अपने आपको न्यौछावर करने के लिए तैयार हो ही जाते हैं। बाबा को प्रत्यक्ष करने का ख्याल तो हम सभी को है ही। बाबा को दो प्रकार से प्रत्यक्ष करना है:-

1. अपने चेहरे और चलन द्वारा, 2. सेवा द्वारा। चलन और चेहरा प्राप्ति का हो। हम कहें नहीं कि हमें खुशी मिली है लेकिन हमारा चेहरा दिखावे कि इन्हों को कोई अलौकिक प्राप्ति है। इनके चेहरे पर खुशी की झलक है, शांति की रेखायें हैं, ये शक्ति रूप हैं। ये डगमग होने वाले नहीं हैं, एक-रस रहने वाले हैं – लोगों को अन्दर से ऐसा महसूस हो। हमारा चेहरा ही चैतन्य म्युजियम का काम करे। बाबा कहते कि आपकी चलन और चेहरे से ऐसा सबूत दिखाई दे जो अनुभव करें, पूछें, उनके दिल में यह शुभ संकल्प

उठे कि यह इन्हों को कहाँ से मिला है, कैसे मिला है?

सेवा द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए पहले हर एक की नब्ज जरूर देखनी चाहिए। अगर उसकी इच्छा नहीं है, जिज्ञासा नहीं है और आप उसको सारा ज्ञान दे दो, सप्ताह कोर्स एक ही दिन में करवा दो पर उनके पल्ले तो कुछ नहीं पड़ेगा। तो नब्ज देख करके पहले उनकी धरनी बनाओ। उनको खुद इच्छा हो कि हाँ, इन्हों को जो मिला है वह हमको भी प्राप्त करना चाहिए और जहाँ से हुआ है वहाँ का परिचय हमको लेना चाहिए।

इसके लिए हमें अपनी बुद्धि को बिल्कुल साफ रखना है। बुद्धि में कोई किचड़ा न हो माना बुद्धि में इधर-उधर की बातें नहीं हों। बुद्धि सदा क्लीन, क्लीयर और केयरफुल हो। उसी धारणा से हम जिज्ञासुओं को समझाते, कोर्स कराते तो उनको तीर लगता है। हम अपनी धारणाओं से बाबा को सहज प्रत्यक्ष कर सकते हैं।

प्रश्नः- हम अपना विचार सागर मंथन आप जैसा कैसे बनायें?

उत्तरः- हम विचार सागर मंथन या मनन किस बात पर करेंगे? जो बाबा ने दिया है, उसी पर ही मनन करेंगे, मन की बातों पर तो मनन नहीं करेंगे। हम मनन करके कोई बाहर की स्टोरीज़ आदि भी नहीं सुना सकते। वह तो भक्तिमार्ग वाले हमसे अच्छी स्टोरीज़ जानते हैं, सुनाते हैं। हम बाबा की प्वाइंटस को प्रैक्टिकल में स्वयं अनुभव करके, विस्तारपूर्वक बुद्धि में स्पष्ट करके दूसरों को सुनाते हैं। उसमें अपनी मिक्स नहीं करते। मिक्स करने से आत्माओं को इतना फायदा नहीं होता। अगर कोई स्टोरी रूप में सुनाता है तो वह अपने में फंसाता है और अपने में फंसाना यह बहुत बड़ी गलती है। कहेंगे, यह बहन बहुत अच्छी है, यह बहुत अच्छा सुनाती है। अच्छी तरह से स्पष्ट करके सुनाती है। अरे बहन ने लाया कहाँ से? बाप से लाया। मानो कोई मेरे गुण को देख करके मेरी तरफ आकर्षित होते हैं, दादी बहुत अच्छी है, दादी से बहुत कुछ मिलता है, लेकिन दादी ने लाया कहाँ से? बाबा से लाया ना! आत्मा को, आत्मा से वर्सा नहीं मिल सकता। वर्सा बाप से ही मिलता है। तो अगर बाप से उसका कनेक्शन नहीं जोड़ा, तो उस आत्मा के कल्याण के निमित्त बने या अकल्याण के? आजकल दुनिया के लोग बॉडी कान्सेस बहुत है, वे विदेही बाप को बहुत मुश्किल से पहचान सकते हैं, इसलिए देह में फँसना तो उन्हों की आदत है, चाहे अलौकिक देह में, चाहे लौकिक देह में फँसें। हमको अटेन्शन रखना है कि कोई भी आत्मा मुझ देहधारी के आकर्षण में नहीं आवे। गुणों की आकर्षण में भी आते हैं तो भी रांग है, गुण दिया किसने? तो फाउन्डेशन यह होना चाहिए कि जिज्ञासु का बुद्धियोग बाप से जुटे। परमात्मा से उसे कुछ प्राप्ति हो। मेरा भाषण सुनकर सिर्फ अच्छा-अच्छा नहीं कहे। इस बात का बहुत अटेन्शन चाहिए। इसके लिए पहले हमारा कनेक्शन शिवबाबा से ठीक जुटा रहे। मनन करके बाबा की स्टोरी, बाबा के यज्ञ की कोई स्टोरी है वह भले सुनाओ लेकिन बाहर की स्टोरीज़ नहीं सुनाओ।

प्रश्नः- अशरीरी, विदेही और आत्म-अभिमानी स्थिति का अनुभव बताइये?

उत्तरः- हम आत्मा इस देह में हैं, आत्मिक स्थिति में स्थित होके कर्म भी कर रहे हैं, चल भी रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं - वह **आत्म-अभिमानी स्थिति** है। शरीर में रहते हुए भी आत्मा जैसे मालिक बनकर कर्म करा रही है। **अशरीरी माना शरीर में हैं लेकिन शरीर के भान में नहीं आवें,** बिल्कुल ही जैसे न्यारे हैं। शरीर का भान हमको नीचे नहीं खींचता है। विदेही अवस्था है परमधाम की स्टेज। एकदम देह रहित आत्मा। जैसे बाबा देह से मुक्त है, देह है ही नहीं, वैसे हम आत्मायें भी असली रूप में तो देह में थे ही नहीं, पीछे आये, पार्ट बजाया फिर हम देहधारी बने तो **विदेही अवस्था है परमधाम की स्टेज।** हम परमधाम में विदेही बाबा के साथ एकदम विदेही स्थिति में स्थित हो जायें। इन तीनों अवस्थाओं का लगभग साथ-साथ का कनेक्शन है। ❖

विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में मैंने लिखा था कि शीलइंद्रा दादी, रोजी बहन, डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.ऊषा, जगदीश भाई और मैं – इन छह डेलीगेट्स को बाबा ने विश्व सेवा के प्रति चुना और विदाई देने के लिए स्वयं अव्यक्त बापदादा पांडव भवन में उपस्थित रहे। उनसे तीन वरदान लेकर हम विश्व सेवा पर निकले –

1. आप बच्चों के लिए बाबा ने सब तैयारी करके रखी है। कमरे में रोशनी करने के लिए लाइट का स्विच दबाने में जितनी मेहनत होती है, उससे भी कम मेहनत आपको सेवा में लगेगी। 2. आप बच्चे देवता हो, लेवता नहीं। आप विश्व को ईश्वरीय ज्ञान, योग की शिक्षा देने निकले हो। 3. एक सेवाकेन्द्र पूरब में और एक पश्चिम में स्थापित करना है।

पंद्रह जुलाई, 1971 को हम पाँच डेलीगेट्स निकले। लौकिक काम था इसलिए ऊषा जी थोड़े दिन रुककर डेलीगेशन में शामिल हुई। हवाई जहाज का पहला स्टॉप ग्रीस में एथेन्स था। हमने आधा-पौना घंटा उस धरती पर ग्रीस देश के पुराने दर्शन-शास्त्र के बारे में चर्चा की और फिर हम ब्रुसेल्स पहुँचे जहाँ ऐरोप्लेन कंपनी ने ही हमारे रहने का बंदोबस्त अपने ही पाँच सितारा होटल में किया था। वहाँ हमने अपने साथ लाये खाने का आनन्द लिया और सेवा के लिए निकल पड़े। ब्रुसेल्स में ही एक साल पहले अंतर्राष्ट्रीय योग का अधिवेशन हुआ था जिस कारण हमें वहाँ के नामी-गिरामी दर्शनशास्त्रियों के नाम-पते मिल गये। उनसे मुलाकात कर बाबा का संदेश, साहित्य दिया।

दूसरे दिन दोपहर में हम पाँच डेलीगेट्स लंदन एयरपोर्ट पर उतरे। थोड़े बहन-भाई लेने को आये थे और हम मुरली भाई और रजनी बहन (जयंती बहन के माता-पिता) के घर पहुँचे। रात को लंदन सेवा के बारे में विचार-विमर्श हुआ। वहाँ पर मुंबई के भ्राता सतीश मोहन तथा अन्य कई भाई-बहनों से मिलना हुआ। हम पाँच डेलीगेट्स थे, अथक होकर रोज के पाँच-पाँच कार्यक्रम किये। प्रदर्शनी के चित्र पहले से भेज दिये थे, उनसे भी सेवा की। लैस्टर में दो दिन रहे और एक दिन मैनचेस्टर गये। दोनों स्थानों के हिन्दू मंदिरों में काफी सेवायें हुई। वहाँ भारत से गये हुए बहन-भाइयों के साथ 15 दिन रहकर सेवा की और उनमें बहुत उमंग-उत्साह भर गया।

हमारे साथ शीलइंद्रा दादी संदेशी थी। हमने बाबा को संदेश भिजवाया कि आपने कहा था कि एक सेवाकेन्द्र पूरब में और एक सेवाकेन्द्र पश्चिम में खोलना है। हमारी इच्छा पश्चिम में लंदन में सेवाकेन्द्र खोलने की है। हममें से तीन डेलीगेट्स लंदन में रुक जायेंगे तथा दो डेलीगेट्स पूरब में जायेंगे, कुछ दिनों में ऊषा जी भी आ जायेंगी और इस प्रकार चार डेलीगेट्स द्वारा लंदन की सेवाओं में चार चांद लग जायेंगे। अव्यक्त बापदादा ने यह बात मंजूर की और मुझे तथा डॉ. निर्मला बहन को आगे अमेरिका में Awosting Retreat cum Conference में ब्रह्माकुमारीज़ के प्रतिनिधि के रूप में जाने की स्वीकृति दी।

मैं और डॉ.निर्मला बहन 15 दिन लंदन में सेवा करके अमेरिका जाने के लिए निकले। मेरे लौकिक दो भतीजे पीटर्सबर्ग में थे तथा न्यूयार्क में एक खास दोस्त महेन्द्र था। रोज़ी बहन के एक रिश्तेदार न्यूयार्क में थे। हमने न्यूयार्क में अपने दोस्त के पास पत्र-व्यवहार करके रहने का प्रबंध किया था। हम उनके साथ न्यूयार्क शहर घूमे। अगले दिन रविवार सुबह मेरे दोस्त महेन्द्र भाई कार में हमें Awosting Retreat में लेकर गये। वापस आने का कोई प्रबंध नहीं हुआ इसलिए हमने बाबा पर छोड़ दिया कि कोई न कोई प्रबंध मिल जायेगा। कांफ्रेंस में हम प्रदर्शनी के

चित्र भी लेकर गये थे, वहाँ एक हॉल में प्रदर्शनी के चित्रों की सजावट की और सेवा की। अमेरिका के सभी नामी-गिरामी योगियों के साथ परिचय हुआ। जब हम भारत से निकले थे तब से मन में एक प्रश्न था कि विदेश में ईश्वरीय सेवा कैसे की जाये। बापदादा ने यह कहा था कि समय पर सब प्रश्नों का समाधान हो जायेगा।

कांफ्रेंस का उद्घाटन रविवार को हो गया। सोमवार सुबह मैं उस रिट्रीट सेन्टर के बगीचे में गया जहाँ अलग-अलग ग्रुप्स में सब बैठकर रूह-रिहान कर रहे थे। मैं भी एक ग्रुप के पास बैठ गया। निर्मला बहन दूसरे ग्रुप के पास जाकर बैठ गई। मेरे वाले ग्रुप में भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक के प्रवचन की कैसेट बज रही थी और सब शांति से सुन रहे थे। मैं भी भारत की प्रचलित मान्यताओं पर आधारित वह व्याख्यान सुनता रहा। पौने घंटे बाद कैसेट समाप्त हुई। सबने उस दार्शनिक के तत्वज्ञान की बहुत महिमा की। तब मुझे बाबा की टचिंग मिली कि यहाँ शिवाचार्य की महिमा होनी चाहिए, शंकराचार्य की नहीं इसलिए मैंने उन 40-50 भाई-बहनों को कहा कि आप दार्शनिक के तत्वज्ञान की महिमा करते हो, उसमें सिर्फ पुनरावृत्ति है, ना ही उसमें कोई तर्क है। सब मेरी तरफ देखने लगे। मैंने कहा, मैं आपका आधा-पौना घंटा ले सकता हूँ? उन्होंने स्वीकृति दी। फिर हमने अव्यक्त बापदादा की प्रेरणा से उस दार्शनिक के विचारों के सामने बाबा के ज्ञान के विचार स्पष्ट रूप में रखे। सभी डेलीगेट्स के पास यह समाचार पहुँच गया कि ब्रह्माकुमारीज़ से दो प्रतिनिधि आये हैं, उनके विचार नये हैं, वे परमात्मा का दिया सच्चा ज्ञान सुनाते हैं। कांफ्रेंस के प्रथम दिन ही ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार हो गया। इसी प्रकार हमारी प्रदर्शनी में भी बहुत लोग आते रहे और हमसे मिलने के लिए भी बहुत लोग आते थे। हम भी उनके साथ घरेलू रूप से, आम रीति से शिवबाबा के ज्ञान की चर्चा करते थे।

वहाँ पर किचन था जहाँ हाथ से खाना पकाकर खाते थे। ईश्वरीय सेवा की मस्ती में मस्त होकर जैसे अपनी ही कांफ्रेंस है, इस प्रकार से हम सेवा करते रहे। परिणामरूप सभी डेलीगेट्स के साथ हमारा संपर्क बढ़ गया। उसमें से एक गुजराती भाई चेनू भाई मोदी से बात हुई कि हमें न्यूयार्क में ईश्वरीय सेवार्थ रहने की जगह चाहिए। उन्होंने अपने घर का पता लिखाया और हमें घर पर आकर मिलने को कहा। दूसरी एक बहन मिली जो न्यूयार्क में Yoga Guild of America नाम से योगाभ्यास की संस्था चलाती थी। उसने भी हमको अपने स्टूडियो में आने का निमंत्रण दिया। कई भारत से आये हुए संन्यासी-महात्मा भी मिले। फिर संकल्प आया कि हम 170 मील दूर से वापिस अपने मित्र के घर कैसे जायेंगे। मीटिंग की समाप्ति दूसरे रविवार को थी और उस दिन सुबह 9 बजे एक भाई घूमता-घूमता हमारे पास आया और कहने लगा, रमेश भाई, आप मुझे भूल गये, मैं आपको जानता हूँ, आपका पत्र मिला, आप इस रिट्रीट में आये हैं इसलिए न्यूयार्क से यहाँ मिलने चला आया।

उस भाई ने मुम्बई में बाबा की प्रदर्शनी देखी थी। उसे मालूम था कि हमारा डेलीगेशन अमेरिका आने वाला है, उस समय उन्होंने अपना पता हमें लिखवाया था। वह भाई रविवार हमारे साथ रहा, भोजन किया। रविवार रात ही जाने वाला था, हमने उसे रोक लिया। वह भाई कॉलेज में प्रोफेसर था, उसने कॉलेज फोन करके एक दिन की छुट्टी ले ली। सोमवार सुबह जल्दी उठकर कार में उसके साथ न्यूयार्क अपने दोस्त के घर जाने के लिए निकले। पहले हम भारतीय दूतावास में पहुँचे क्योंकि हमने भारत से उनके साथ पत्र-व्यवहार किया था। हमने लिखा था कि हमें न्यूयार्क में राजयोग की प्रदर्शनी करनी है, उसके लिए स्थान तथा रहने का प्रबंध चाहिए। दूतावास से पत्र भी आया था कि हमने आपकी

राजयोग की प्रदर्शनी के लिए स्थान ढूँढ़ा पर कोई हॉल नहीं मिला। रहने का भी कोई प्रबंध नहीं हो सका है। हमने सोचा कि दूतावास में जाकर पुन: पता करें। जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने फिर अपनी असमर्थता जताई। फिर उस बहन के स्टूडियो में गये जो न्यूयार्क में Yoga Guild of America नाम से योगाभ्यास की संस्था चलाती थी। उनका स्टूडियो बहुत अच्छा था, उसने पूछा, आपको कितने दिन प्रदर्शनी करनी है? तब हमने शिवबाबा को याद करके कहा कि 11 दिन हम राजयोग प्रदर्शनी रखेंगे। उसने पूछा, आप प्रदर्शनी देखने वालों से क्या फीस लेंगे? हमने कहा, हम देने आये हैं, लेने नहीं इसलिए एक पैसा भी नहीं लेंगे। बाकी आपका जो भी किराया हो, हम देने को तैयार हैं।

हम सोच रहे थे कि देखें, बाबा का क्या जादू चलता है। उस बहन ने कहा कि आपको जितने दिन चाहिए, फ्री में हॉल प्रयोग कर सकते हैं। हम दोनों हैरान रह गये और सोचने लगे कि बाबा ने सत्य ही कहा था कि सब प्रकार की तैयारियाँ हो चुकी हैं। इसका 11 दिन का किराया 3300 डॉलर बनता था। हमारे पास इतने पैसे नहीं थे। यह तो बाबा की कमाल थी जो फ्री में मिल गया। उसने अपनी पेन्ट्री भी दिखाई और कहा, उस कांफ्रेंस में भी आप अपना खाना खुद पकाते थे। मेरी इस पेन्ट्री में आप खाना भी पका सकते हैं, चाय-कॉफी भी बना सकते हैं। मैं इस हॉल में चलने वाली क्लासेस को 11 दिन के लिए बंद रखूँगी। हमने उन्हें बताया कि कल मंगलवार को हम पीटर्सबर्ग जा रहे हैं, हफ्ते के बाद आयेंगे। उसने कहा कि मैं आपको चाबी दे रही हूँ। आपको जितना दिन रहना हो, आप मेरा यह स्टूडियो इस्तेमाल कर सकते हैं।

वहाँ से हम चीनू भाई मोदी के पास गये। उनकी युगल अमेरिकन नागरिक थी। उन्होंने भी अपना घर दिखाया। उन्होंने कहा, हम तीन महीने के लिए शिकागो जा रहे हैं। हमारा घर खाली है, आप तीन महीने के लिए यहाँ रह सकते हैं। मैंने उनसे किराये के लिए पूछा तो उन्होंने अपनी युगल से राय-सलाह कर कहा कि वैसे भी घर बंद रहने वाला है, आप इसे सेवार्थ लगायेंगे। आप केवल बिजली, टेलिफोन का बिल चुक्तू करके जाना। फिर उन्होंने कहा, हमारे फ्रीज में आटा, दूध, सब्जी आदि पड़े हैं, आप इस्तेमाल करना। मैंने निर्मला बहन की तरफ देखा। उन्होंने कहा, रमेश भाई, यह भाई जो ऑफर करता है, उसे मान जाओ। हमें नहीं पता, दाल, सब्जी, आटा कहाँ मिलता है। यहाँ हमें सब खाने का सामान मिल रहा है। बाबा ने कहा है कि हर चीज का प्रबंध करके रखा है। हमने मान लिया और चाबी ले ली और कहा कि हम कल पीटर्सबर्ग जा रहे हैं, वहाँ से आने के बाद आकर रहेंगे। रात को जब महेन्द्र भाई को दोनों चाबियाँ दिखाई और कहा कि यह प्रबंध फ्री में मिला है तब वह भी ईश्वरीय मदद के बारे में सोचने लगा।

अगले दिन हम दोनों पीटर्सबर्ग गये। वहाँ पर मेरे दोनों लौकिक भतीजे लेने आये थे। पहले वाला पीटर्सबर्ग यूनिवर्सिटी में तथा दूसरा कारनेगीमेलन यूनिवर्सिटी में पढ़ता था। दोनों ने अपनी यूनिवर्सिटी में हमारे कार्यक्रम रखे। रेडियो इंटरव्यू का कार्यक्रम भी हुआ।

कारनेगीमेलन यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र (Philosophy) के विभागाध्यक्ष के द्वारा हमें निमंत्रण मिला था। लेक्चर का टॉपिक था, Incarnation of God अर्थात् परमात्मा का अवतरण। मैंने कहा, चार्ल्स डार्विन का उत्क्रांतिवाद वैज्ञानिक और तर्कसंगत नहीं है। उसके अंदर अनेक प्रकार की त्रुटियाँ हैं। तब उस यूनिवर्सिटी के विज्ञान के विभागाध्यक्ष ने कहा कि रमेश भाई, आप अध्यात्म की दुनिया के प्रतिनिधि हैं, आप विज्ञान की बातों को क्या जानें। तब मैंने कहा, ऐसी कोई बात

(शेष..पृष्ठ 19 पर)

किसान की शान

● ब्रह्माकुमार विनय कुमार, अम्बिकापुर

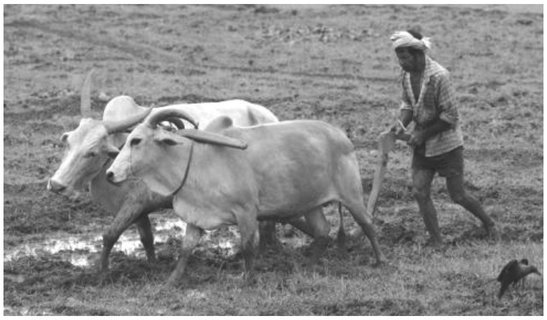

भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ 70% मानव समुदाय कृषि पर आधारित है। आजकल इस क्षेत्र में नये-नये साधन निकल चुके हैं जिससे कृषि विकास उत्तरोत्तर होता जा रहा है। उत्पादन क्षमता भी बढ़ रही है परंतु आध्यात्मिक दृष्टि में, अनाज सिर्फ पेट का पेट्रोल है। शरीर रूपी गाड़ी का भोजन तो खेती-बाड़ी से प्राप्त हो जाता है परंतु आत्मा को भोजन कहाँ से मिले? उसके लिए श्रेष्ठ कर्मों की खेती करनी पड़ेगी।

शान को जानें तो परेशान न हों

भौतिक खेती करने वाले को किसान कहा जाता है। किसान शब्द में दो शब्द हैं – कि + सान। इसका अर्थ है, क्या शान? आपकी शान क्या है? क्या आप अपनी शान को जानते हो? क्या किसान को अपनी शान का ज्ञान है? यदि शान का पता हो तो किसान कभी परेशान नहीं होगा। शान का पता न होने के कारण वह केवल शरीर की कमाई करता है परंतु आत्मा के लिए क्या करना है, वह नहीं जानता।

उलझन, उज्ज्वल बनने नहीं देती

यदि वह दोनों प्रकार की किसानी करे तब असली शान में रह सके। शान माना आंतरिक गुणों और शक्तियों की चमक। पहले ज़माने में खेती होती थी बैलों से। कुछ हिस्सों में ऊँटों से भी होती थी। आजकल भी जिन किसानों के पास ट्रैक्टर आदि साधन नहीं हैं, वे अभी भी बैलों और ऊँटों पर आधारित हैं। हल जोतने के लिए दो बैलों की ज़रूरत होती है। उन बैलों को जोतने और चलाने का भी प्रशिक्षण लेना पड़ता है। बिना प्रशिक्षण के बैलों को वश में करना और उनसे काम लेना असंभव है। कई बैल कामचोर, आलसी होते हैं, हल में जोतो तो बैठ जाते हैं, कई इधर-उधर भागने लग जाते हैं। किसान के पास भी मन, बुद्धि रूपी दो सूक्ष्म बैल हैं। इन दोनों को ठीक से चलाने के लिए भी आध्यात्मिक ज्ञान चाहिए। यदि मन चंचलता करता है, व्यर्थ भटकता है, व्यसनों या अन्य विकारों की ओर चलायमान होता है और कमज़ोर बुद्धि उसे नियंत्रित करने में असमर्थ रहती है तो मानो वह अपनी शान से परे चला जाता है। यह आंतरिक उलझन उसके आंतरिक गुणों और शक्तियों को उज्ज्वल नहीं बनने देती।

आध्यात्मिक ज्ञान रूपी अनुशासन

बैलों की चंचलता को रोकने के लिए किसान के पास एक लाठी होती है, उसके अग्र भाग पर लोहे का नुकीला लगा होता है। उसके द्वारा बैलों को नियंत्रित किया जाता है। मन और बुद्धि रूपी बैलों को नियंत्रित करने के लिए भी आध्यात्मिक ज्ञान रूपी अनुशासन की ज़रूरत है। इसके चार पहलू हैं। प्रथम है नित्य सत्संग। सत्संग माना परमपिता परमात्मा जो परम सत्य सुनाने वाले हैं, उनका बुद्धि से संग। जैसा संग होगा, वैसा रंग लगेगा। परमात्म-संग से उनके गुण और शक्तियाँ आत्मा में भरते जायेंगे। दूसरा है शुद्ध आहार। कहा जाता है, जैसा अन्न, वैसा मन। परमपिता परमात्मा शिव की याद में बनाया हुआ, उनको समर्पित किया हुआ, शुद्ध सात्विक पदार्थों से निर्मित भोजन ही

ग्रहण करना। तीसरा है दैवी गुणों की धारणा। दैवी गुण वे गुण हैं जिनको धारण करने से मनुष्य देवपद प्राप्त करता है। नम्रता, हर्षितमुखता, पवित्रता, सत्यता, अंतर्मुखता आदि दैवी गुणों को साथ रखकर कार्य-व्यवहार करने से कार्य की गुणवत्ता बढ़ जाती है। कर्मक्षेत्र पर उत्तरोत्तर सफलता मिलती जाती है। चौथा है मन, वचन, कर्म की पवित्रता। विचार, वाणी और कर्म को काम, क्रोध, लोभ आदि महाशत्रुओं से मुक्त रखना ही सर्वोच्च पवित्रता है।

सत्संग से बनती है बुद्धि दिव्य

कई बार ऐसा भी होता है कि दो में से एक बैल धीरहा होता है और दूसरा तूफानी। तूफानी भागने की कोशिश करता है तब धीरहा बैल उसे थामने में मदद करता है। इसी प्रकार मन, बुद्धि में से भी जब मन रूपी बैल भागने की चेष्टा करता है तो बुद्धि धैर्य की शक्ति से उसे थाम लेती है। इसके लिए बुद्धि का दिव्य होना, शक्तिशाली होना ज़रूरी है जो प्रतिदिन सत्संग करने से और परमात्मा पिता की श्रीमत पर चलने से हो जाती है।

जब किसान के बैल उसके अनुरूप चलते हैं तो कम समय में ज्यादा कार्य होता है और किसान की आमदनी भी अच्छी होती है और किसान जल्दी ही धनवान बन जाता है। इसी प्रकार, मन और बुद्धि पर नियंत्रण होने से भी किसान सर्वगुणों से संपन्न, सर्वशक्तियों से संपन्न, क्षमताओं से संपन्न, कलाओं में कुशल, अपने सर्व कर्त्तव्यों को निभाने में सक्षम, सर्व कमी-कमज़ोरियों से निवृत्त हो जाता है, सर्व आध्यात्मिक प्राप्तियों से धनवान हो जाता है। उसका जीवन सुख, शांति, प्रेम, आनन्द, पवित्रता से लबालब हो जाता है। फिर संस्कार-स्वभाव भी सुधर कर दैवी बन जाते हैं और श्रेष्ठ कर्मों की कमाई से वह पद्मपति बन जाता है। मन, बुद्धि को वश में रखने का नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में दिया जाता है। आप किसी भी स्थानीय शाखा से संपर्क कर सकते हैं। ❖

विकल अंग और विकल मन

राजबीर सिंह, फरीदाबाद

हमारी सरकार ने शारीरिक रूप से अक्षम (विकलांग, Physically challenged) लोगों को अनेक सुविधायें दे रखी हैं। बसों, ट्रेनों में उनका किराया माफ कर रखा है, वाहनों में उनके बैठने की सीट्स रिजर्व कर रखी हैं और भी अनेक प्रकार की सुविधायें उन्हें उपलब्ध कराई जाती हैं।

विकलांग लोग वे हैं जिनका कोई न कोई शारीरिक अंग त्रुटिपूर्ण है, असक्षम है। परंतु यदि हम मानसिक विकलांगता (Mentally challenged) का आंकड़ा निकालें तो आज स्थिति बड़ी भयंकर है। ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर बैठे, बड़े-बड़े कार्यभार उठाने के निमित्त व्यक्ति भी मानसिक रूप से विकल हैं, उनका मन उनके वश में नहीं है, वे सोचना कुछ और चाहते हैं पर मन लुढ़क किसी और तरफ जाता है। जैसे विकल अंगों में अनायास दर्द उठता रहता है उसी प्रकार उनका विकल मन भी अनेक दर्दों से पीड़ित रहता है। कभी ईर्ष्या, कभी द्वेष, कभी क्रोध, कभी अहंकार, कभी दोष-दृष्टि, कभी संदेह, कभी बदले की भावना, कभी झूठ, कभी शोषण, कभी काम-वासना, कभी लोभ – इस प्रकार के अनगिनत प्रकार के सूक्ष्म दर्दों से परेशान रहता है।

लौकिक सरकार से भी बड़ी ईश्वरीय सरकार के पास विकल मन वालों के लिए कई योजनायें हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से परमात्मा पिता ही इन योजनाओं को चला रहे हैं। वे अपने बेचैन मन वाले बच्चों का आह्वान कर रहे हैं, बच्चे आओ, मन के तनाव की, चिन्ता की नि:शुल्क दवा पाओ। वह दवा है राजयोग। यह राजयोग इतना सहज है कि इसे आप चलते-फिरते, कार्यव्यवहार निभाते, घर-परिवार की ज़िम्मेवारियाँ पूरी करते भी अभ्यास में ला सकते हैं। ❖

मन जीते जगतजीत

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

कहा गया है, मन जीते जगतजीत। मन को जीतना अर्थात् मन के संकल्पों को वश करना। आत्मा की तीनों सूक्ष्म शक्तियों में मन सबसे ज्यादा गति वाला है। कोई भी वस्तु या व्यक्ति जब किसी भी इन्द्री के संपर्क में आते हैं तो उन्हें ग्रहण करना मन का ही काम है। मन अपनी पुरानी आदत अनुसार उस वस्तु या व्यक्ति पर प्रभावित या उससे आकर्षित भी तुरंत हो जाता है। जैसे बाज़ार में जाते हुए फलों की ठेली को देख तुरंत ललचाता या आकर्षित होता है। कभी किसी सुंदर चेहरे या सुंदर वस्तु में अटक जाता है। इस अटकने से बचाने वाली बुद्धि है। बुद्धि उसे समझाती है कि इस समय जिस कार्य के लिए हम घर से निकले हैं, वह अधिक ज़रूरी है। अत: इन व्यक्ति और वस्तुओं के चिंतन में अपनी ऊर्जा को लगाने के बजाय अपनी मंज़िल की ओर बढ़ो। बुद्धि की इस दखलअंदाज़ी या समझानी से मन वहाँ से हट जाता है और मंज़िल प्राप्ति में बुद्धि का साथ देता है। दोनों के मेल से हुआ यह कार्य संस्कार रूप में संग्रहित हो जाता है और भविष्य में इस प्रकार की स्थिति पुन: निर्मित होने पर मन को कहीं अटकने से बचाने में मदद रूप बनता है।

मन आत्मा की एक शक्ति है। आत्मा को हम लाइट (प्रकाश) और माइट (शक्ति) कहते हैं। आत्मा का रूप तो अति सूक्ष्म है परंतु इतनी सूक्ष्म होते भी इतने बड़े स्थूल शरीर को नियंत्रित करती है। जब आत्मा में इतनी शक्ति है तो मन में भी तो शक्ति है और इस शक्ति का सदुपयोग बहुत ज़रूरी है।

मन है बच्चे की तरह

मन के क्रियाकलापों की तुलना एक बच्चे से की जा सकती है। एक बच्चे में भी शक्ति होती है। आजकल तो यह शक्ति स्कूली पढ़ाई में लग जाती है परंतु कई बार बच्चे जब पढ़ाई के बंधन से मुक्त होते हैं, घर का कोई कार्य उन्हें दिया नहीं गया होता है, माता-पिता या बड़े अपने-अपने कार्य में व्यस्त होते हैं तो ये बच्चे अपनी शक्ति को कहीं ना कहीं लगाने का रास्ता ढूँढ़ लेते हैं जैसे बगीचे में फूल-पत्ते तोड़ सकते हैं, दीवार पर लकीरें खींच सकते हैं, रेत या कंकड़ के ढेर को उछाल-उछाल कर मैले हो सकते हैं। चूंकि उनके पास ऊर्जा है, उसे कहीं तो लगायेंगे ही। मन की भी यही गति है। मन अपनी ऊर्जा को कहीं तो लगायेगा ही, यदि सार्थक बातों में नहीं लगायेगा तो निरर्थक में लगायेगा।

अपने से बातें करें

इसलिए अध्यात्म में मन के साथ बातें करने का बहुत महत्व है। मन से बातें अर्थात् अपने आपसे बातें। जैसे हम बच्चे को बार-बार टोकते हैं, पूछते हैं, तुम यहाँ क्या कर रहे हो, क्यों खड़े हो, इसी प्रकार अपने मन से भी पूछें, तुम इस समय कहाँ हो, क्या कर रहे हो, किस उद्देश्य से यहाँ हो? यहाँ होने का तुम्हें क्या लाभ है? बच्चे पर ध्यान देने से बच्चे की शरारतें बंद हो जाती हैं, मन पर ध्यान देने से मन की भटकन, मन की चंचलता और व्यर्थ विचारों की उलझन समाप्त हो जाती है।

भटकन है ध्यान न देने का परिणाम

जब कोई माता-पिता कहते हैं कि हमारा बच्चा कहना नहीं मानता, आवारा हो गया है तो सुनने वाले के मन में एकदम विचार कौंधता है कि शायद इन्होंने बाल्यकाल से ही उसे संभाला नहीं, उसे अधिक खुला छोड़ा है, उस पर ध्यान नहीं दिया है। यही बात उस व्यक्ति पर भी लागू होती है जो कहता है, मेरा मन भटकता है, स्थिर नहीं होता, जहाँ लगाना चाहता हूँ, वहाँ नहीं लगता। अवश्य ही उसने भी कभी मन की चाल पर ध्यान नहीं दिया, मन से बातें नहीं की, उसका हाल-चाल नहीं पूछा, उसकी दिशा

को टटोला नहीं, उसे खुला छोड़ दिया, जहाँ गया जाने दिया। पूछा तक नहीं, क्यों गया, कहाँ गया, किसलिए गया? दूसरों के लिए क्यों, क्या करता है पर अपने मन की चाल पर कोई प्रश्न नहीं उठाता, ना उसे जानने की, ना उसे मोड़ने या रोकने की कोशिश करता है। बस इतना कहकर अपना पीछा छुड़ा लेता है कि क्या करूँ मन भटकता है। ऐसा कहना तो उसे भटकने की शह देना है। आप आत्मा के होते, आपका मन भटके तो आपके होने का महत्व ही क्या रह गया है? आप क्या कर रहे हो, क्या इससे बातें करके, समझाके इसकी व्यर्थ चाल को रोक नहीं सकते?

मन को कहो, नई बात करे

जब मन में एक ही व्यर्थ विचार बार-बार सिर उठाये और चाहने पर भी पीछा ना छोड़े, तो आप युक्ति अपनाइये। कौन-सी? जैसे कोई दूसरा व्यक्ति एक ही बात बार-बार आपको सुनाये तो आप उसे कह देते हो ना कि यह तो आप सुना चुके हो और मैं सुन चुका हूँ फिर बार-बार सुनाकर मेरा समय बर्बाद क्यों कर रहे हो? इसी प्रकार अपने मन को भी कहिए कि क्या तुम्हारे पास कोई नई चीज़ नहीं है जो उसी बासी, पुरानी बात को पुन: पुन: परोस रहे हो। अरे मेरे मन, तेरी वही-वही बात सुनते-सुनते मैं (आत्मा) भी ऊबने लगा हूँ। मेरी ऊब दूर करने के लिए मुझे कोई अच्छी, नई बात सुना। इस प्रकार अपने से बातें करके मन के व्यर्थ प्रवाह से बचा जा सकता है।

बुराई की जड़ अंदर है

कई बार हम बाह्य जगत की शिकायत करते हैं कि इनमें इतनी नकारात्मकता है जिस कारण न चाहते भी मन पर नकारात्मकता का असर आ जाता है। यह भी गलतफहमी है। बाहरी जगत में कितनी भी भटकाने वाली बातें हों यदि अंदर के संस्कार उन्हें नहीं पकड़ते या उनकी तरफ नहीं खिंचते तो उनका होना या न होना एक-समान हो जाता है। जैसे एक गाय सड़क पर जा रही है, तीन लोग उसे देखते हैं। पहले व्यक्ति के मन में आया, गाय पूज्या है, इसमें 33 करोड़ देवी-देवताओं का निवास है, इसे नमस्कार कर लेता हूँ। दूसरे के मन में आया, गाय दुधारू लगती है, इसे इसके मालिक से खरीद लूँ तो प्रतिदिन 10 कि.ग्रा. तक दूध मिल सकता है। तीसरे ने सोचा, मोटी गाय है, चुपके से चुरा ले चलूँ तो काफी मांस मिल सकता है।

देखिये, गाय तो एक ही है पर तीनों के क्रमश: सतो, रजो, तमोगुणी विचार क्यों हैं क्योंकि तीनों के भीतर वैसे-वैसे संस्कार भरे पड़े हैं। जैसे संस्कार अंदर हैं, उनके अनुसार बाहरी जगत की चीज़ों के प्रति विचार बनते हैं। यदि अंदर पेट्रोल ना हो तो बाहर कितनी भी आग हो, हमारा क्या बिगाड़ेगी? बिगड़ता तब है जब अंदर ज्वलनशील पदार्थ है, इस पदार्थ के आकर्षण में ही तो बाहर की ज्वाला भीतर प्रवेश करती है। अत: परिवर्तन बाहर नहीं करना। बाहरी जगत का परिवर्तन नहीं, परिवर्तन भीतर चाहिए। भीतर के बुरे संस्कारों का उन्मूलन चाहिए। भीतर से उन्मूलन होते ही बाहर से स्वत: अप्रभावित हो जायेंगे। भीतर के संस्कारों को समाप्त करने के लिए योग की गहन अनुभूति चाहिए जिसे ईश्वरीय महावाक्यों में ज्वालास्वरूप योग अथवा बीजरूप स्थिति कहा गया है।

व्यर्थ है चूसे हुए छिलके के समान

स्थूल जगत में उपयोगिताविहीन चीज़ों को जलाकर या अन्य तरीके से नष्ट कर दिया जाता है उसी प्रकार सूक्ष्म जगत अर्थात् मन के व्यर्थ विचारों को भी नष्ट करने में ही भलाई है। संसार में अनेक रसीली चीज़ें हैं, उदाहरणार्थ गन्ने को ही ले लीजिए। जब गन्ने की पोरी बनाकर, मुख में रखकर चूसते हैं तो रस निकलता है और मज़ा आता है परंतु रस एक ही बार निकलता है फिर तो छिलका ही बचता है जिसे हम मुख से निकालकर

फेंक देते हैं। इसी प्रकार किसी भी घटना के घटने पर उसका सार एक ही बार में ग्रहण कर लिया जाता है। जैसे गन्ने के चूसे हुए छिलके को पुन: पुन: मुख में रखने से उसमें से रस नहीं निकल सकता, और ही वह छिलका मुख की त्वचा को नुकसान पहुँचाने वाला बन जाता है, उसे व्यर्थ की चीज़ समझकर फेंकने में ही भलाई है उसी प्रकार बीती हुई बात या घटना को मन में पुन: पुन: दोहराना भी छिलके चूसने जैसा ही है अत: जो बात हो चुकी उसे बिन्दी लगाकर आगे बढ़ने में ही कल्याण है।

मान लीजिए, कोई व्यक्ति ट्रेन में सफर कर रहा है और टी.सी. उससे टिकट दिखाने को कहता है। वह वरिष्ठ नागरिक है जिसे टिकट के साथ अपना पहचान-पत्र भी दिखाना अनिवार्य है। यह व्यक्ति फोटोकॉपी वाला पहचान-पत्र दिखाता है जिसे टीसी स्वीकार करने से मना करता है। काफी अनुनय के बाद वह मान जाता है और टिकट ओ.के. करके आगे बढ़ जाता है। अब इस घटना का सार यही निकला कि व्यक्ति को मूल पहचान-पत्र के साथ यात्रा करनी चाहिए, नकल के साथ नहीं।

परंतु यदि वह व्यक्ति घटना के बीत जाने के बाद भी मन में चिंतन करता रहे कि टी.सी. ने यह कहा, मैंने यह कहा, फिर टी.सी. ने यह कहा तो यह व्यर्थ के छिलके चूसने जैसा ही है। अब उसमें से कोई रस निकलने वाला नहीं है अत: घटना से शिक्षा लेकर उसे बिन्दु लगाने में ही कल्याण है।

कई बार, हम हँसने-हँसाने की बातें करते और सुनते हैं परंतु हँसी भी एक बार आती है। दुबारा वही बात कहने-सुनने में हँसी कमतर होती जाती है और कई बार रिपीट होने पर तो उसे सुनना अच्छा भी नहीं लगता। जैसे कि उपरोक्त उदाहरण में कहा गया है कि छिलकों से रस बार-बार नहीं निकलता इसी प्रकार बातों का रस भी एक-दो बार सुनने में ही आता है, बार-बार सुनने में प्राप्त नहीं होता।

कभी-कभी दोहराई भी आवश्यक

उपरोक्त बात साधारण घटनाओं के लिए कही गई है परंतु जैसे कई विद्यार्थी पाठ की दोहराई बार-बार करते हैं पर वह उद्देश्यपूर्ण है। वह दोहराई परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक है। कई बार हम प्रजापिता ब्रह्मा तथा मातेश्वरी या वरिष्ठ दादियों या भाई-बहनों के जीवन के अनुभवों को बार-बार दोहराते हैं, सुनते हैं या अन्य महान आत्माओं के जीवन की घटनाओं को बार-बार सुनते हैं। जितनी बार सुनते हैं, नई ऊर्जा पाते हैं। ये बातें तो आत्मा के लिए अन्न, पानी और हवा की तरह हैं। हमारे आध्यात्मिक व्यक्तित्व के अति आवश्यक अंग हैं, इन्हें तो सप्रयास दोहराना चाहिए। ❖

विदेश सेवा का...पृष्ठ 14 का शेष

नहीं है। हम मानते हैं कि ज्ञान और विज्ञान दोनों जुड़वा भाई हैं और इसलिए यदि आप मुझे 2 घंटे का समय दें तो मैं डार्विन के उत्क्रांतिवाद की त्रुटियाँ बताऊँ। उन्होंने सभा से पूछकर मुझे दो घंटे का समय दिया। दो घंटे के प्रवचन के बाद सारी सभा ने महसूस किया कि उत्क्रांतिवाद अर्थात् अमीबा के बढ़ते-बढ़ते मानवीय जीवन तक पहुँचने का सिद्धांत गलत है। हमारे पूर्वज बंदर नहीं देवता हैं। सभा ने हमारी बात को तालियों का समर्थन दिया। एक बहन जो अन्य विभाग की अध्यक्षा थी, ने कहा कि आज पहली बार विज्ञान और धर्म की स्पर्धा में धर्म की विजय हुई है, विज्ञान परास्त हुआ है। इस प्रकार विदेश की सेवा में यह बात अनुभव में आई कि बुद्धिजीवियों को उनकी मान्यताओं की असत्यता बताकर ही अध्यात्म के प्रति आकर्षित किया जा सकता है।

बाद में हम दोनों न्यूयार्क वापिस आये। महेन्द्र भाई और उनकी युगल चीनू भाई के घर घरेलू सामान ले आये। शाम को लंदन से भ्राता जगदीश जी और रोजी बहन आये। लंदन में शीलइंद्रा दादी और ऊषा जी सात दिन और रहे और बाद में न्यूयार्क आये। इस प्रकार अमेरिका की विधिवत् सेवा शुरू हुई। ❖

गतांक से आगे...

समय की पहचान

● ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

अकसर मनुष्य चल रहे 'अच्छे समय' या 'बुरे समय' की दुहाई देते हैं परन्तु समय तो बस समय है, यह कभी अच्छा या बुरा नहीं होता। यदि कुसंस्कारों के वश कोई समय का दुरुपयोग करता है तो आगामी समय उसके लिए बुरा हो जाता है और यदि कोई समय का सदुपयोग करता है, तो आगामी समय अच्छा हो कर उसे सुख-शान्ति देता है। हर कार्य का अपना समय होता है, परन्तु किसी भी समय हर कार्य को नहीं किया जा सकता। आप नहाने का कार्य रात्रि 12 बजे नहीं कर सकते। कोई दुकानदार भी अपनी दुकान रात दो बजे (अपवाद छोड़कर) नहीं खोल सकता।

समय नहीं रुक सकता

धंधे में जुटा मनुष्य जब बीमार पड़ता है तो उसे काम रोकना पड़ता है परन्तु समय को वह नहीं रोक सकता। अब स्वास्थ्य भी तब ठीक रहेगा जब स्वास्थ्य हेतु प्रतिदिन कुछ 'समय' निकाला जाये। ज्ञान के अभाव में मनुष्य भूतकाल व भविष्यकाल का बोझ उठाये फिरता है। इससे उसके मन में हलचल बनी रहती है, उसे जीवन का सुख नहीं मिल पाता। **इस 'हलचल' का 'हल' है वर्तमान में 'चल' अर्थात् भूतकाल के 'हलाहल' को न पी और भविष्य के डर को त्याग।** कर्मयोगी मनुष्य का सम्बन्ध 'आज' से ही होता है। 'कर्म' व 'योग' आज व अभी में रह कर ही किये जा सकते हैं, बीते 'कल' व आगामी 'कल' में नहीं।

समय को 'आज' बनाकर गुज़ारिये

एक कर्मयोगी यह नहीं सोचता कि उसने कितने घंटे कार्य किया परन्तु यह सोचता है कि एक घंटे में कितना कार्य किया। इसके विपरीत एक आलसी व कामचोर मनुष्य 'कार्य' कितना हुआ, यह ना सोच कर केवल यह सोचता है कि उसने कितने घंटे कार्य किया। गुणों की धारणा एक कर्मयोगी के कर्म में तीव्रता व गुणवत्ता लाती है। गुणों की धारणा में समय लम्बा लगता है परन्तु उसके पश्चात् कर्म सुगमता से होते हैं। प्रतिदिन के 'आज' को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन मानना चाहिये और आज में भी 'अभी' के क्षणों को अमृततुल्य मानना चाहिये। परन्तु आलस्य व अलबेलापन 'अभी' में जीने नहीं देता। ऐसा मनुष्य सारा जीवन 'कल से' करने की सोचता रहता है। मनुष्य के वश में आज है, कल नहीं। आलसी के जीवन में कल हमेशा 'कल' रहता है और एक ऊर्जावान-विवेकवान मनुष्य का पूरा जीवन 'आज' हो कर गुज़रता है।

एक माता किसी महात्मा के पास गई और पूछा कि बच्चे की शिक्षा किस उम्र से शुरू करनी चाहिए। उत्तर मिला कि बच्चे के पैदा होने के बीस बरस पहले। महात्माजी का भाव यह था कि बच्चे को वही माता श्रेष्ठ शिक्षा दे सकती है जिसने खुद बचपन से ही अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रखी हो।

समय को भी पसंद है सात्विक मनुष्य

पश्चिम जर्मनी के प्रधानमंत्री कोन्राड एडिनावर जब जीवन के नवें दशक में पहुंचे तो एक बार सख्त बीमार हुए। किसी भी उपचार से उन्हें फायदा नहीं हो रहा था। एक दिन निजी डॉक्टर से उन्होंने कहा कि आप इतने दिनों से मेरा इलाज कर रहे हो फिर भी मेरी सेहत गिरती ही जा रही है! डॉक्टर को यह बात अच्छी नहीं लगी और वह बोला कि मैं इलाज कर तो रहा हूँ पर मैं कोई जादूगर नहीं हूँ जो आपको फिर से जवान कर दूँ। इस पर एडिनावर ने कहा कि मैंने यह तो कहा ही नहीं है कि मैं फिर से जवान होना चाहता हूँ। मैं तो यह चाहता हूँ

कि काफी वर्षों तक मैं और ज़्यादा बूढ़ा होता जाऊं। यह एक आध्यात्मिक सत्य है कि जिसके संकल्प जितने ज्यादा सकारात्मक व कल्याणकारी होते हैं, उसकी उम्र भी उतनी ही ज़्यादा होती है। 'समय' को वह मनुष्य पसन्द है, जो सात्विक या सतोप्रधान है।

आत्म-उन्नति के लिए एक घंटा

मनुष्य अपने रुपयों-पैसों का बजट इस प्रकार बनाता है कि खर्च कम हो और बचत ज़्यादा और जो बचत हो, उस पर बैंक में ज़्यादा से ज़्यादा ब्याज मिले। परन्तु अपने बहुमूल्य समय को वह एक शहंशाह की भांति लुटाता है। वह इने-गिने दैनिक आवश्यक कार्य करने में 24 घंटे पूरे कर देता है और स्वउन्नति हेतु पुरुषार्थ करने को आवश्यक कार्य मानता हीं नहीं। उसे पता नहीं कि इन्हीं 24 घंटों में से 1-2 घंटे आध्यात्मिक साधना हेतु बड़ी सहजता से निकाले जा सकते हैं। यदि एक कांच के बरतन में 24 टेनिस-बॉल (24 घंटे) समा सकती हैं, तो उसमें फिर भी काफी कुछ डाला जा सकता है। उसमें काफी छोटे-छोटे कंकड़ (छोटी-छोटी प्रभु स्मृतियां) डाले जा सकते हैं। कंकड़ से भरने पर भी उसमें काफी मात्रा में सूखा रेत (शुभ संकल्प) डाला जा सकता है। उसी 24 गेंद वाले बर्तन में फिर काफी पानी (ज्ञानजल) डाला जा सकता है। इसी प्रकार मनुष्य अपने 24 घंटों के व्यस्त समय में आत्मोन्नति हेतु काफी नये–नये काम कर सकता है। बस वह समय के मूल्य को पहचाने व श्रेष्ठ लक्ष्य को स्मृति में रखे।

बेकद्री है जीवन की

आज कोर्ट-कचहरी में 'समय' की जितनी तौहीन की जा रही है वह अचम्भे वाली बात है। बीस-बीस साल तक केस झूलते रहते हैं। यदि किसी को फांसी की सज़ा सुनायी जाती है तो उसका समय तय कर दिया जाता है परन्तु किसी को बरी किया जाना हो तो सुनवाई में देरी की जाती है। यह आश्चर्य है कि यदि कई साल जेल में बंद रहने के बाद कोई निरपराधी घोषित हो कर छूट जाता है, तो उसके उतने 'समय' का कोई मुआवज़ा नहीं दिया जाता। यह उसके जीवन की बेकद्री है।

समय की सबसे छोटी इकाई 'सेकण्ड' है। तीन सेकण्ड के मेल से एक 'क्षण' बनता है, 24 सेकण्ड के मेल से एक 'पल' बनता है और साठ सेकण्ड के मेल से एक **'मिनट'** बनता है। एक **'घड़ी'** बनती है 24 मिनट के मेल से। इस प्रकार मनुष्यों ने समय के महत्व को समझते हुए समय की अवधि के अनुसार इकाइयां बनायी हैं। इनका उपयोग विज्ञान के क्षेत्र में तो होता है परन्तु धार्मिक या आध्यात्मिक क्षेत्र में समय की अवहेलना की जाती है। यह तो कह दिया जाता है कि 'मैं इतने सालों से इस धार्मिक या ज्ञान मार्ग पर चल रहा हूं' परन्तु यह नहीं चेक किया जाता कि मेरे आचरण में ज्ञान कितना चल रहा है। अन्यथा मनुष्य अपनी अप्राप्तियों के प्रति सजग होता और जांच करता कि कहीं वह समय नष्ट तो नहीं कर रहा है?

समय की समदृष्टि

समय किसी की परवाह नहीं करता। वह ना तो किसी पुरुषार्थी पर 'वाह' करता है और न किसी पापी पर 'वार'। वह सबके प्रति समभाव, समदृष्टि रखता है। किसी भी कार्यक्रम में समय पर पहुंचना, समय का सम्मान करना है परन्तु आज समाज में जो वी. आई. पी. सम्मान पाते हैं, वे अकसर समय पर नहीं पहुंचते। असली वी.आई.पी. तो वह है जो समय से पहले पहुंच जाये। समय पर पहुंचने वाला आयोजकों से स्वाभाविक 'प्रेम' पाता है और विलम्ब से पहुंचने वाला आयोजकों के दिखावटी प्रेम व परोक्ष झुंझलाहट का पात्र बनता है। असली सम्मान की उत्पत्ति प्रेम से होती है।

इस क्षणभंगुर जीवन में छोटी-छोटी चिन्ताओं के लिए कोई समय नहीं होना चाहिये। जो समय चिन्ता में गया, समझो कि वह कूड़ेदान में गया। जो समय चिन्तन में गया, समझो कि बैंक में जमा हो गया। चिन्ता दुख की

छाया है। छाया तभी मिटती है जब आगे और पीछे, दोनों तरफ प्रकाश हो अर्थात् जब भविष्य व भूतकाल, दोनों के प्रति विवेक-सम्मत ज्ञान हो। वास्तव में भविष्य व भूतकाल की घटनाओं के प्रति चिन्ता ही वर्तमान के दुख का कारण है।

पहले कर्म है और फिर फल परन्तु आज का मनुष्य कर्म करने के वर्तमान के समय में कटौती करके भविष्य-फल की चिन्ता पहले करता है। महान धावक मिल्खा सिंह ने ओलम्पिक के फाइनल में दौड़ते हुए पीछे मुड़ कर देखा कि दूसरा उनसे कितना पीछे है और इससे गति में जो गिरावट आई, उससे दूसरे नम्बर का धावक उनसे आगे निकल गया। मिल्खा सिंह ने फल की चिन्ता की और कर्म में आई गिरावट ने स्वर्ण पदक का फल छीन लिया।

देखा जाये तो बीता हुआ कल 'मरा हुआ समय' है और आने वाला कल 'गर्भ में पड़ा अजन्मा समय' है, परन्तु 'आज' तो 'जीवित समय' है। आज में भी 'अभी' का समय दुर्लभ प्राप्तियां कराने वाला समय है। कहा भी जाता है 'अभी नहीं तो कभी नहीं'। यह 'अभी' ही अमृत है जो अमरता का अनुभव कराता है।

(समाप्त)

दिल पर लगी अमिट छाप

● ब्रह्माकुमारी सुरेन मोदी, कोलकाता

बिना किसी विशेष जानकारी के माउंट आबू ज्ञान सरोवर जाना हुआ। अवाक् हो आँखें देखती ही रह गई। जिसकी तलाश मुझे बचपन से थी, फिर भी दिल को पता नहीं था कि उसे क्या चाहिए। अंदर का खालीपन कभी भी किसी बाहरी वस्तु से भरा ही नहीं। जब कभी भी अकेली होती तो मन उदास हो उठता। दुनिया का सब कुछ था मगर दिल खाली था। ज्ञान सरोवर में सुकून मिला, लगा मेरी मंज़िल है यहाँ।

कुछ समय बाद शिव बाबा के अवतरण कार्यक्रम में शान्तिवन जाना हुआ। प्रफुल्लित मन से एक बात लेकर गई कि जिस नशे का यह पूरा वातावरण दीवाना है, वो नशा मुझे भी चाहिए। शान्तिवन में जिनसे भी मिलने का सौभाग्य मिला, उनकी आँखों में एक तेज था, प्रेम से लबालब। प्रेम के अलावा कुछ नहीं और इसी निष्कपट व निर्मल प्रेम की मुझे तलाश थी।

जब स्टेज पर दृष्टि मिली तो सोचा था, जादू होगा। रात में सोते समय विचार आया कि वो पागलपन तो आया ही नहीं जिसमें सब कुछ बह जाता है। लगा, कोई हौले से कह रहा है, धीरज रख। दूसरे दिन सायंकाल फिर श्रद्धेय निर्वैर भाई साहेब से मिलना हुआ और उनकी आँखों में देखते ही अपने भीतर का सब कुछ बाहर बह जाने को ज़ोर मारने लगा। संकोच भी बहुत कि सबके सामने यह क्या हो रहा है, क्या करूँ? वहाँ से उठने का मन भी नहीं, पर उठना तो था ही। रात में नींद नहीं आ रही थी, मन करे एक बार फिर जाकर मिलूँ मगर यह असंभव भी था। पति ने समझाया कि सुबह की फ्लाइट पकड़ वापिस कोलकाता चलना है अतः सोना भी ज़रूरी है एवं इतने वरिष्ठ भ्राता से अचानक सुबह फिर मिलने की हिम्मत व सुयोग अपने जैसों के लिए नामुमकिन है। मुझे फिर लगा, कोई कह रहा है कि बापदादा के घर में सुबह हक से जाओ, डर से नहीं।

सुबह साढ़े सात बजे बिना पूर्व नियोजित कार्यक्रम के हमारे श्रद्धेय भाई साहब हम लोगों से जिस प्यार व वात्सल्य भाव से मिले, भीतर और बाहर सब कुछ भर गया। दिल पर एक अमिट छाप लगी। लगा, अंदर में कोई कह रहा है कि बच्चे, देखो, बाबा का प्यार देखो और यही प्यार तुम्हारी आँखों में भी हो तभी शान्तिवन आना व बाबा से मिलन सार्थक है। और तो और हमारे भाई साहब की रूमाल हिलाते हुए स्नेहमयी विदाई, इस आश्वासन के साथ कि फिर अपने घर आना ही है, हमेशा अविस्मरणीय रहेगी। कोलकाता की निमित्त प्रभारी कानन बहन जी के अनुसार, ब्रह्मा बाबा भी अपने बच्चों को रूमाल हिलाते हुए स्नेहयुक्त विदाई दिया करते थे।

अंत मति सो गति

● ब्रह्माकुमार शोभाराम सिंह, देवीपुर (सतना)

कहा गया है कि जो मनुष्य अंतकाल में किसी मित्र, संबंधी, पदार्थ या वस्तु को याद करता हुआ शरीर छोड़ता है, उसे सद्‌गति प्राप्त नहीं होती है। जो भगवान को याद करता हुआ शरीर छोड़ता है, वही सद्‌गति (भगवान) को प्राप्त होता है।

अब प्रश्न उठता है कि हमें अंत समय ईश्वर कैसे याद आये जिससे हमारी सद्‌गति हो। इसके लिए हमें अभी से सभी कार्य करते हुए बुद्धि का योग ईश्वर से लगाना पड़ेगा। जैसे कोई मनुष्य किसी प्रतियोगी परीक्षा में पास होने के लिए पहले से ही तैयारी करता है और पास हो जाता है। यदि वह उसी दिन तैयारी करे तो पास नहीं हो सकता है। वैसे ही हम भी अगर चाहें कि ईश्वर को उसी तिथि को याद करें जिस तिथि को हमारा अंतकाल होगा तो हम नहीं कर पायेंगे क्योंकि हमें मालूम ही नहीं है कि हमारी मृत्यु कब होगी, इसलिए हम सबको अभी से, सभी कार्य करते हुए ईश्वर को याद करने का अभ्यास करना चाहिए।

कई लोग कहते हैं कि अभी दुनिया का मज़ा ले लें, बुढ़ापे में भगवान का भजन करेंगे लेकिन उन्होंने अपने जीवन में जैसा अच्छा-बुरा कर्म किया है, चिंतन किया है, मरते समय भी वही याद आयेगा। याद रखिए, जैसे अधिक धागे मिलकर जब रस्सी बन जाते हैं तो उनको तोड़ना कठिन हो जाता है वैसे ही बुढ़ापे में जब संस्कार पुराने हो जाते हैं तो उनको बदलना कठिन हो जाता है। इसलिए काल का भरोसा न करके जो कार्य कल करना है, उसे आज ही कीजिये। अज्ञान के कारण सुख रूप भासने वाले विषय विकारों में फँसकर हीरे समान मनुष्य जीवन को कौड़ी के बदले मत गंवाइये। निरंतर भगवान को याद कीजिये। रामायण में लिखा है,

नर तन पाई विषय मन देही।
पलटि सुधा से सठ विष लेही।

अब प्रश्न उठता है कि हम नौकरी-धंधा करते हुए ईश्वर को कैसे याद करें। जिसका किसी से प्रेम होता है, वह कार्य में चाहे जितना भी व्यस्त हो, उसे अपने प्रेमी की याद अवश्य बनी रहती है, वह भुलाये नहीं भूलती। जैसे किसी पत्नी का पति घर से बाहर रहता है तो वह पति को याद करते हुए घर के सभी कार्य करती रहती है। जब पत्नी के याद के प्रकंपन पति के पास पहुँचते हैं तो पति भी पत्नी को याद करने लगता है। वैसे ही जब हम ईश्वर को याद करते हैं तो हमारी याद के प्रकंपन ईश्वर के पास पहुँचते हैं तब ईश्वर भी हमें याद करने लगता है जिसका प्रमाण यादगार शास्त्रों में है। यादगार शास्त्र महाभारत में वर्णन आता है कि जब भीष्म पितामह मृत्यु शैय्या पर पड़े थे तब वे श्रीकृष्ण को याद कर रहे थे और श्रीकृष्ण भीष्म पितामह को याद कर रहे थे। भगवान कहते हैं कि जो मनुष्य मुझे जैसे भजता है, याद करता है, मैं भी उसे वैसे याद करता हूँ। जब श्रीराम वन में रहते थे और श्रीभरत अयोध्या में रहते थे तब श्रीभरत, श्रीराम को याद करते थे और श्रीराम, श्रीभरत को याद करते थे। कहा गया है,

जो नहि जानत राम को
तिन्हहि न जानत राम।

प्रत्येक क्रिया के बराबर और विपरीत क्रिया होती है। अगर हम किसी से प्रेम करते हैं तो वह आदमी भी हमसे प्रेम करता है और जब हम किसी से घृणा करते हैं तो वह भी हमसे घृणा करता है। रामायण में लिखा है,

राम राम मरत मुख आवा।
अधमउ मुक्त होय श्रुति गावा।।

लेकिन जिस मनुष्य ने अपने जीवन में कभी भगवान का नाम ही नहीं लिया है, उनको याद ही नहीं किया है तो वह मरते समय भगवान का नाम कैसे लेगा, उनको याद कैसे करेगा। मेरी दादी एक गीत गाया करती थी,

राम कहत चल,
काम करत चल,
न काहू का डर है।
यह परदेशी नगर वसा है,
न काहू का घर है।।

(शेष..पृष्ठ 26 पर)

सरलता

● डॉ.संजय माली, पाचोरा

परमात्मा गुणों के अविनाशी भंडार हैं तो दाता भी हैं। गुण सागर के संपर्क में आने वाला हर इंसान इन गुणों से अपनी गागर भर लेता है। गुणज्ञ, गुणेश परमात्मा हमें गुणमूर्त एवं सच्चा-सच्चा वारिस बनाते हैं और विश्व की राजाई देते हैं। कल्प में ऐसा सिर्फ एक बार होता है। सद्‌गुण ही मनुष्य को पूजनीय, वंदनीय, स्तवनीय एवं प्रशंसनीय बनाते हैं। सद्‌गुणों की धारणा से मनुष्य के मन में श्रेष्ठ विचार वैसे ही उत्पन्न होते हैं जैसे कि वसंत ऋतु में वृक्षों पर सुंदर-सुंदर पुष्प खिलते हैं। सद्‌गुण और सद्‌विचार एक साथ आने से सत्कर्म बनने लगते हैं जैसे जलबादल और ठंडी हवा के एक साथ आने से जलधारायें बरसने लगती हैं। सद्‌विचारी और कर्मकुशल योगी ही परमात्मा के स्वर्ग स्थापना के कार्य में निमित्त बनते हैं। वे अपना तो अपना, दूसरों का भी जीवनशिल्प सुंदर बनाने में मददगार बन जाते हैं और इस धरा को पावन बनाने का महान कार्य संपादित करते हैं। अव्यक्त परमात्मा योगीजनों के द्वारा अलौकिक कार्य वैसे ही करवाते हैं जैसे कि अव्यक्त बिजली के करंट से अलग-अलग प्रकार की मशीनें अपना-अपना नियोजित काम निर्धारित समय में पूर्ण करती हैं। प्रस्तुत लेख में 'सरलता' नामक दिव्य गुण की चर्चा की जा रही है।

जहाँ चाह, वहाँ राह

गुणी बनने की सिर्फ चाह होनी चाहिये। कहते भी हैं, जहाँ चाह, वहाँ राह और जहाँ राह, वहाँ दुखों की आह भी खत्म हो जाती है। परमपिता से प्राप्त सद्‌गुणों की खुशबू से किसी का भी जीवन महक जाता है और वह मानव असीम खुशियों से भर जाता है, अविनाशी शांति से संपन्न हो जाता है तथा आदर्श जीवन का अधिकारी बन जाता है। ऐसे बेफिक्र बादशाह को देखकर हर किसी का अंत:करण अनायास ही आह्लादित होता है और दिल से दुआ निकलती है। फिर सहज ही ख्याल आता है कि यह कौन शिल्पकार है जिसकी रचना इतनी सुंदर है तो वह कितना सुंदर होगा। वाह मेरा बाबा, वाह संगमयुग, वाह मेरा भाग्य।

सरलता ही सुंदरता

सद्‌गुणों की धारणा ही मनुष्य-जीवन का सार है। बाबा कहते हैं, अच्छा बनो, अच्छे कर्म करो। सद्‌गुण सत् परमात्मा से हमारी मुलाकात कराते हैं और हमारी थकान मिटाते हैं। दुर्गुण अर्थात् दूर + गुण जो हमें परमात्मा से दूर ले जाते हैं और ज़िन्दगी में बहुत थकाते हैं। सरलता है अच्छाई रूपी उपवन का खुशबूदार फूल, रूहे गुलाब। वास्तव में सरलता ही आत्मा की सुंदरता है। यही अच्छाई का आधार है तथा दिव्यता की पहचान है, महानता की निशानी है। सरलता हमें निष्पाप बनाती है इसलिए यही सर्वोत्तम तप है। सद्व्यवहार इसका प्रत्यक्ष स्वरूप है। हर्षितमुखता इसकी सूरत है, निरभिमानिता इसकी मूरत है। यही ज्ञानियों का तीर्थ है।

सरलता बनाती है समाधानी

परमात्मा को जिसने पहचाना तथा आत्मा को जाना है वही सरलता का मर्मज्ञ है। सरलता में छिपी है आत्मा की सफाई। मन, वचन, कर्म में सच्चाई और सफाई हो तभी दुनिया पावन बनती है। सरल स्वभावी मनुष्य को हर कोई अपना समझता है, पसंद करता है। व्यवहार में पारदर्शिता एवं आचरण में सभ्यता हो तो परमात्मा दूर नहीं। ऐसा व्यक्ति संसार में कोहिनूर हीरे के समान शोभा पाता है और प्रेमसिन्धु परमात्मा के दिलतख्त पर विराजमान होता है। सादगी और सरलता धारक मनुष्य रॉयल स्वभाव का और सदा समाधानी होता है। उसमें रूहानियत नज़र आती है। कहते भी हैं, सादा जीवन उच्च विचार।

दुख को हँसते-हँसते सहना है

मनुष्य की आंतरिक व बाह्य स्वच्छता चारों ओर पवित्रता बिखेरती है। जैसे लाइटहाऊस प्रकाश

बिखेरता है, सरलता, स्वच्छता, सादगी और पवित्रता से व्यक्तित्व में मधुरता प्रकट होती है जो महान आत्मा की परिचायक है। जिसमें कुटिलता एवं दंभ का ज़रा भी नामोनिशान न हो, ऐसा भोला-भाला इंसान इस संसार से न्यारा, सबका प्यारा, प्रभु की आँखों का तारा, मातपिता का राजदुलारा और दीन-दुखियों का सहारा बन जाता है। सरलता का गुण आत्मा का अमूल्य गहना है, ऐसा बाबा का कहना है। इसलिए हमें प्रेम से रहना है। हर दुख को हँसते-हँसते सहना है।

सरलता सर्वगुणों की खान है

जहाँ सरलता है, वहीं पर विश्वास पनपता है। विश्वास ही श्रद्धा का भाई है। जहाँ विश्वास और श्रद्धा दोनों हैं वहीं पर प्रज्ञा प्रगट होती है। विश्वास, श्रद्धा और प्रज्ञा हमें शीलवान के साथ-साथ कर्मयोगी भी बनाती हैं। कर्मयोग की करामात से ज्ञान का स्वरूप प्रत्यक्ष अवतरित होता है। आत्माओं में नवचैतन्य भरता है और नवयुग का निर्माण होता है। नवीनता जीवन को ताज़गी से भर देती है। कुटिलता का त्याग ही सरलता है और यही परमात्मा तक पहुँचने का मेन गेट है। जब तक जीवन में सरलता, समता, शील, उदारता और पवित्रता नहीं तब तक किसी की भी आध्यात्मिक उन्नति संभव नहीं है। यादगार शास्त्र महाभारत में दिखाया गया है कि महात्मा विदुर सरल स्वभावी थे इसलिए भगवान उन्हें दिल से प्रेम करते थे। प्रसाद भी उन्हीं के घर से ग्रहण किया था, न कि कुटिल दुर्योधन के राजप्रासाद से। सरलता में सहज मिठास एवं अपनापन होता है। यादगार शास्त्र रामायण साक्षी है कि सरल ह्रदया शबरी के झूठे बेर भगवान ने प्रसन्नतापूर्वक चखे थे। सरलता का सीधा संबंध निर्मल दिल से है।

सरलता है उड़ती कला में ले जाने वाली उड़नतश्तरी

सचमुच हर मनुष्य को चाहिए कि वह भी सरलमार्गी बने। अपना तो अपना औरों का भी कल्याण करे। सरलता शब्द देखें। सर + लता अर्थात् संसार के सर माना मालिक तक पहुँचाने वाली यह जादुई लता है। सरलता है भ्रष्टता को मिटाने वाला स्वदर्शन चक्र। हर इंसान को आज इसे धारण करने की आवश्यकता है। तभी तो संसार में व्याप्त पाप ताप का खात्मा किया जा सकेगा। सरलता ही सिद्धि है। सरलता उड़ती कला में ले जाने वाली 'उड़नतश्तरी' है। सरलता का गुण धारण करने से सत्ययुग आता है। कुटिलता ही हीनता है जो नरकगामी है। सरलता तो परमात्म बच्चों को प्राप्त दिव्य वरदान है। सृष्टि निर्माता सर्वशक्तिमान सर्वेश्वर को पहचानने वाला हर कोई सरल, सुस्वभावी, उसका प्यारा, इस दुनिया से न्यारा हो जाता है। फिर वह कभी भी किसी के साथ धोखाधड़ी या दुर्व्यवहार नहीं कर सकता। किसी को दुख नहीं दे सकता। सरलता ही शिष्टाचार एवं श्रेष्ठाचार है। जो श्रीमत को अच्छी तरह समझता है और अपने जीवन में उतारता है, वह सचमुच ही धन्य है। सरलता हमें निष्कलंक बनाती है, व्यक्तित्व को संवारती है तथा उसमें उत्कृष्टता भरती है।

सरलता में है निर्मलता

सरल व्यक्ति ही भगवान के अलौकिक प्यार को प्राप्त कर सकता है। जीवन में इससे बड़ी और कोई प्राप्ति नहीं होती। सच्चाई के बल से सरलता रूपी नौका पर सवार होकर प्रेम के चप्पू चलाकर ही हम माया रूपी समंदर को पार कर सकते हैं। सरलता चैतन्य चंद्रमा की सुखदायी शीतल चांदनी है और कुटिलता रावणधाम का रास्ता। सरलता का गुण मानव में निर्मलता के बीज बोता है। निर्भयता उसी का फल होता है। सरल स्वभाव वाला सर्व का सहयोगी बन जाता है। ऐसा व्यक्ति सभी से प्रेम करता है इसलिए उसे भगवान का प्रेम स्वत: ही मिलता है। सरलता में सर्व के दिलों को जीतने की शक्ति होती है। सरलता की ताकत से महान से महान कार्य भी सहजता से किये जा सकते हैं। महात्मा गांधी जी और ब्रह्मा बाबा

इसकी उत्तम मिसाल हैं।

धरत परिए, धर्म न छोड़िए

हर किसी को सरलता को अपनाना चाहिए, ऐसा ज्ञानियों का कहना है। कभी-कभी यह भी सुना जाता है कि सीधे-साधे मनुष्य को समाज में कुछ लोग बेवजह ही तंग करते हैं। यह भी सत्य है। अग्निपरीक्षा से ही आत्मा रूपी सीता का सतीत्व साबित होता है। परमात्मा के सच्चे बच्चे किसी भी परीक्षा में तनिक भी नहीं घबराते। अच्छे को कभी भी अच्छाई का त्याग नहीं करना चाहिये। भले कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न झेलनी पड़ें पर धरत परिये धरम न छोड़िये। सच्चाई की राह पर चलना कठिन ज़रूर है पर इसमें एक अलौकिक खुशी और समाधान समाया है जो भगवान का वरदान है। माँझी जब परमात्मा है तब क्यों चिंतित होना! भगवान भी सरल मनुष्य के साथ ही होता है, किसी कपटी के साथ नहीं।

सरलमार्गी मनुष्य एवरप्यूर और एवरग्रीन दिखाई देते हैं। वे एवरहेल्दी, एवरहैप्पी और एवररेडी होते हैं। वे धरती के चैतन्य सितारे होते हैं। उन्हें निराकार द्वारा लंबी और निरामय आयु का वरदानी जीवन प्राप्त होता है। सरलता का व्यवहार सेकंड में मुक्ति-जीवनमुक्ति देने वाला सहज साधन है लेकिन इसे जीवन भर अपनाना होता है और यही मेहनत है। ❖

अंत मति सो गति..पृष्ठ 23 का शेष

इसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि हम सभी आत्माओं को अपने परमपिता को याद करते हुए, अपने-अपने नौकरी-धंधे का पार्ट बजाते हुए चलना है, इसमें किसी का कोई डर नहीं है क्योंकि हम आत्मायें अविनाशी हैं तथा निर्भयता हम आत्माओं का मूलभूत गुण है। हम आत्मायें यहाँ पराये देश अर्थात् प्रकृति के देश में रहते हैं। यहाँ किसी का असली घर नहीं है।

कोई मनुष्य किसी कार्यवश घर से बाहर रहता है तो वह किराये पर मकान लेकर रहता है। मकान मालिक और किरायेदार के बीच इकरारनामा लिखा जाता है, तब किरायेदार अपने परिचय-पत्र में दो पते लिखवाता है – एक तो वर्तमान पता तथा दूसरा स्थायी पता। इकरारनामे में यह शर्त लिखी जाती है कि किरायेदार जब तक इस किराये के मकान में रहेगा तब तक इसका मालिक रहेगा परंतु इसकी कोई तोड़-फोड़ नहीं करेगा। टूट-फूट होने पर इसकी मरम्मत करायेगा, इसकी सफाई रखेगा तथा इसकी सब प्रकार से सुरक्षा व्यवस्था करेगा। जब किराये की अवधि समाप्त हो जायेगी तो वह अपने आप मकान खाली कर देगा। किरायेदार इकरारनामे में लिखी सब शर्तों का पूर्ण रूप से पालन करता है और जब किराये की अवधि समाप्त हो जाती है तब वह अपने असली घर चला जाता है।

वैसे ही हम आत्मायें भी इस मृत्युलोक में आकर शरीर रूपी किराये के मकान में रहते हैं और अपना-अपना अभिनय करते हैं। इस शरीर रूपी मकान का मालिक प्रकृति है क्योंकि इस शरीर की रचना प्रकृति के पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश) द्वारा की गई है। जब तक हम शरीर में रहते हैं, तब तक इसके मालिक हैं तथा इसकी हर तरह से सुरक्षा व्यवस्था, सफाई व संभाल आदि करते हैं। जब अभिनय पूरा हो जाता है तथा शरीर रूपी मकान की अवधि समाप्त हो जाती है तब इसे छोड़ देते हैं। तब यह शरीर प्रकृति के पाँच तत्वों में विलीन हो जाता है और हम आत्मायें अपने असली घर या अपने पिता परमात्मा के घर चले जाते हैं जो पाँच तत्वों से परे है जिसे छठा तत्व, ब्रह्मलोक या परमधाम भी कहते हैं। ❖

आवेश और क्रोध वश कर लेने पर शक्ति बढ़ती है, आवेश को आत्मबल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है

ईश्वरीय शासन की अनुभूति

● ब्रह्माकुमार वीर सिंह कठैत, देहरादून

लम्बे समय से धार्मिक चर्चाओं को सुन-सुन भ्रामक मन: स्थिति में रेंगता हुआ मैं एक दिन स्वास्थ्य कारणों से पत्नी के साथ कोटद्वार (उत्तराखण्ड) के छोटे से शहर में डा. शील सौरभ रावत के सानिध्य में आया। डाक्टर साहब ने दवाओं के महत्त्व से अधिक ब्रह्माकुमारीज़ के ईश्वरीय ज्ञान की चर्चा की और ईश्वर को रूहानी सर्जन बताया। मेरे लिए यह अद्‌भुत अनुभव था। सोचा, ज़रूर कुछ विशेष होगा क्योंकि इससे पहले ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में अनर्गल बातें सुनी थीं और उनके संबंध में कोई ठोस धारणा भी नहीं रखता था।

यहाँ सब कुछ सच है

काफी सोच-विचार कर निश्चय किया कि अवश्य इस विचित्रता का भी अनुभव अर्जित किया जाये। पहले अपनी युगल को ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर ले गया। सकारात्मक प्रभाव के कारण स्वयं को भी नहीं रोक पाया और प्रारम्भिक कोर्स करने का निश्चय कर बैठा। कोर्स करते-करते देखा, कुछ विशेष क्या, अलग ही दुनिया का निर्माण हो रहा है। यहाँ सब कुछ सच है और सच ही सकारात्मकता की नींव पक्की कर रहा है। जो कभी नहीं सोच पाया उसे सोचने का रास्ता मिला। जिसे नहीं जानता था उसे पहचानने का सुअवसर मिला। सोचा, यही दुनिया है, जो मुझे पसंद है। यहाँ कच्चा लोहा हीरे में परिवर्तित हो रहा है। पत्थर तराशा जा रहा है और पारस बनाया जा रहा है। ईश्वरीय रचना का बेहतरीन नमूना और विश्व परिवर्तन का अनोखा तरीका।

एक वर्ष बाद, फरवरी, 2004 में 'मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना' से संबंधित सेमिनार में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, आबू पर्वत (मधुबन) जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह ऐसे अनोखे तीर्थस्थल की यात्रा थी जिसके बारे में कभी सोच भी नहीं सकता था।

मरुभूमि में महकता हुआ नन्दनवन

आबू रोड पर रेल से उतरा तो ब्रह्मा वत्सों का प्यार भरा स्वागत और मार्गदर्शन देखते ही बनता था। शान्तिवन में पहुँचे तो लगा कि एक अनोखी दुनिया में पदार्पण हुआ है। मरूभूमि में महकता हुआ यह उपवन शास्त्रों में वर्णित देवताओं के 'नंदनवन' से कहीं भी कम नहीं है। शान्तिवन की शान्ति एवं सुव्यवस्था से लगा कि निश्चित ही स्वर्ग की स्थापना हो रही है। ईश्वर का शासन रामराज्य स्थापित हो रहा है। शिवबाबा कहते हैं, जहाँ न कोई दुख, न रोग, न शोक, न समस्या है ऐसी एक नई दुनिया (सतयुग) की स्थापना की तैयारियाँ हो रही हैं। सब कुछ स्वस्फूर्त हो रहा है असीम शान्ति के साथ, कोई शोर-शराबा नहीं। वातावरण कौतुहलपूर्ण है लेकिन कोलाहल से दूर, पूरी व्यवस्था चाक-चौबन्द, कोई तनाव नहीं। हर एक अनुशासित, नियमित और निश्चिन्त भाव से कर्मपथ पर चल रहा है, सब कुछ जैसे ईश्वरीय निर्देशन से हो रहा है।

शान्तिवन में निर्मित अद्‌भुत डायमण्ड हॉल को देख महसूस होता है कि जैसे नई दुनिया (सतयुग) का राजप्रासाद (महल) बन चुका है, मानो इसके निर्माण की अवधारणा स्वयं देवशिल्पी विश्वकर्मा ने की हो। विश्व का ऐसा भवन जो वृहदाकार है किन्तु स्तम्भों की टेक रहित है, यह भी शिवबाबा के संगमयुगी शिल्पियों का कमाल है।

सुगम पथ का अंगीकरण

दादियों (चैतन्य देवियों) के दर्शन कर, ज्ञानसागर की ज्ञान-गंगाओं से पावन बन, जीवन को धन्य-धन्य महसूस किया। इस प्रकार इस सेमिनार की अवधि भुलाये नहीं

भूलती और इसका वर्णन गूंगे द्वारा अनेक स्वादों को न बता पाने जैसे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव है। इसके साथ ही इस ज्ञान में चलाने वाले डा. रावत का बहुत-बहुत धन्यवाद करना चाहूँगा जिन्होंने हमें ऐसे विश्व विद्यालय का पता बताया, जहां परमपिता परमात्मा स्वयं की तथा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की (बेहद की) पढ़ाई पढ़ाते हैं। विषय-विकारों से छुड़ाकर असीम सुख-शान्ति प्रदान करते हैं। मैं निश्चित भाव से कह सकता हूँ कि जिस दिन मैंने निमित्त बहन से प्रारम्भिक कोर्स किया, ज्ञान प्रसाद प्राप्त किया, मेरे नव जीवन का सही मायने में उन्नयन संस्कार था वह और एक सुगम पथ का अंगीकरण था। ❖

परमात्म परिणय

मनुष्य का भौतिक जीवन विभिन्न संबंधों से युक्त है। विश्व का कोई भी देश, धर्म या वर्ग हो हर जगह संबन्धों का ताना-बाना सहज ही देखने में आता है। भारतीय सनातन संस्कृति, ईश्वरीय ज्ञान, ऊँचे मूल्यों एवं आदर्शों के कारण सम्पूर्ण विश्व में श्रेष्ठ स्थान रखती है। यह मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक के जिन सोलह संस्कारों का वर्णन करती है उसमें पाणिग्रहण संस्कार (विवाह संस्कार) को अत्यन्त श्रेष्ठ संस्कार माना गया है। वर्तमान समय में, भौतिकता की प्रधानता में पाणिग्रहण भी आत्मिक सम्बन्ध न रह कर सिर्फ एक देह का दूसरी देह से सम्बन्ध होकर रह गया है। इस कारण आज संबंधों में स्नेह, सम्मान, प्रेम और सुरक्षा की भावना की जगह तनाव, भय और असुरक्षा की भावना ने ले ली है। तनाव है क्योंकि विचारों में एकरूपता नहीं है। असुरक्षा है क्योंकि सम्बन्ध टूट जाने का अंदेशा है और भय है क्योंकि देह के समाप्त हो जाने का डर है। ऐसी विकट परिस्थिति में मनुष्य आत्माओं को आवश्यकता है उस परम परिणय सूत्र में बंधने की, उस परम जीवन साथी से सम्बन्ध जोड़ने की। इस सम्बन्ध में न भय है, न तनाव है और न असुरक्षा की भावना। अगर कुछ है तो वह है सच्चा सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द, पवित्रता, ज्ञान, शक्ति और उसी परिणय-सूत्र का नाम है ''परमात्म परिणय''।

देह सहित देह के सभी संबंध तो इसी एक जन्म के लिये हैं परन्तु परमात्मा के संग परिणय सम्बन्ध अमरता को प्राप्त हो जाता है। आज की इस हलचल की दुनिया में आवश्यकता है कि प्रत्येक मनुष्य-आत्मा अपने सत्य स्वरूप को और परमात्मा के सत्य स्वरूप को पहचाने। वो परमात्मा सर्व आत्माओं का पारलौकिक पिता भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है और साजन भी है। ज़रूरत है उस सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा के साथ इन सब सम्बन्धों को अनुभव करने की। जिस प्रकार भौतिक जगत में किसी विवाहिता को सदा सुहागिन रहने का आशीर्वाद यह सोचकर दिया जाता है कि उसके जीवन में सुख, प्रसन्नता और श्रृंगार हमेशा बना रहे। तो सोचिये, उस सर्वशक्तिमान, सर्वगुणों के सागर, अकालमूर्त परमपिता परमात्मा के संग परिणय संबंध में बंधने के बाद प्रत्येक मनुष्य आत्मा क्या हमेशा के लिये सुख, प्रसन्नता और सच्चे श्रृंगार की अधिकारी नहीं हो जाएगी? अवश्य हो जाएगी। इसलिए हे मनुष्य आत्माओ, आओ हम अन्तरात्मा की ज्योत को ईश्वरीय ज्ञान रूपी घृत से प्रज्वलित कर अंदर के अंधकार को समाप्त करें। अन्त:करण को ईश्वरीय याद और ईश्वरीय ज्ञान से प्रकाशित करें। सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा के संग परिणय-सूत्र में बंधकर सदाकाल के लिये स्वयं को परम सुख और परम आनंद का अधिकारी बना लें। सदा सुहागन बन जाएँ।

– गौरव त्यागी, केशवपुरी, मुजफ्फरनगर

महासम्मेलन से उभरे कुछ सवाल

पिछले दिनों आबू में अखिल भारतीय गीता वृत्तांत पुनरावृत्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें यह बात सामने आई कि गीता ज्ञान-दाता परमपिता परमात्मा शिव हैं और गीता ज्ञान को धारण कर सोलह कला संपूर्ण बनने वाले सतयुग के प्रथम महाराजकुमार श्रीकृष्ण गीता-माता के पुत्र हैं।

आबू समाचार में छपे एक लेख में, लेखक ने इस सम्मेलन के संबंध में कई सवाल उठाये हैं। उनका एक प्रश्न तो यह है कि 'भगवान कृष्ण को साधारण मानव घोषित करने के पीछे संस्थान की कौन-सी सोच काम कर रही है, समझने की आवश्यकता है।'

ब्रह्माकुमारीज़ की विचारधारा के अनुसार तो श्रीकृष्ण निर्विवाद रूप से अत्यंत महान धार्मिक भी थे और उन्हें राजनैतिक पदवी तथा प्रशासनिक कुशलता भी खूब प्राप्त थी। उन्हें तो भारत के राजा भी पूजते हैं और महात्मा भी महान एवं पूज्य मानते हैं। श्रीकृष्ण तो जन्म से ही पूज्य पदवी को प्राप्त थे। वे जन्म से ही स्वर्ण मुकुट तथा प्रभामण्डल से युक्त अर्थात् दोनों ताजों से सुशोभित थे। श्रीकृष्ण सोलह कला संपूर्ण थे। उनमें शारीरिक आरोग्यता, सुंदरता, आत्मिक बल और पवित्रता तथा दिव्य गुणों की पराकाष्ठा थी। मानव चोले में जो सर्वोत्तम जन्म हो सकता है, वह उनका था। सतयुग से लेकर कलियुग तक अन्य कोई इतना सुंदर, आकर्षक, प्रभावशाली, प्रभुत्वशाली न हुआ है, न हो सकता है।

लेख में आगे लिखा गया है कि 'संस्थान ने कहा कि कृष्ण ने अपना दिव्य रूप नहीं दिखाया, यदि दिखाते तो सब उन्हें देखते।'

ब्रह्माकुमारीज़ की मान्यता है कि श्रीकृष्ण तो स्वयं दिव्य रूप थे। वे इतने आकर्षक थे कि यदि आज भी वे इस पृथ्वी पर कुछ देर के लिए प्रकट हो जायें तो क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम, क्या ईसाई, क्या यहूदी – सभी उनके सामने नतमस्तक हो जायेंगे और मुग्ध होकर उनकी छवि निहारते

खड़े रहेंगे।

लेख में एक और बात यह उठाई गई है कि 'बहस वही चलाई जाये जिससे देश, समाज और धर्म का भला हो।'

ब्रह्माकुमारीज़ की विचारधारा है कि जबकि श्रीमद्भगवद्गीता सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि है तो गीता के भगवान भी सर्वोच्च हैं। इस अर्थ में संसार के सभी धर्मों के मनुष्यों को गीता को ही अपना एकमात्र धर्मग्रंथ मानना चाहिए था और गीता के भगवान को ही सर्व को परमपिता मानना चाहिए था। इस अर्थ में संसार में सर्व आत्माओं में भाईचारा स्थापित होता और आज जो धर्मभेद और उस पर आधारित झगड़ों का नामोनिशान ना होता। विश्व एकता के लिए विश्व के एक पिता की सत्य पहचान और उस द्वारा उच्चारित सत्य ज्ञान को जानना अनिवार्य है।

लेख में लिखा है कि 'ब्रह्माकुमारी संस्थान का कोई मौलिक चिन्तन नहीं, सारा साहित्य इधर-उधर से चुराया गया है।'

ब्रह्माकुमारीज़ का इस संबंध में यही कहना है कि इधर-उधर से चुराया गया होता तो उसमें वही कुछ होता तो इधर-उधर पहले से प्रचलित है। यदि इसमें कुछ नया ना दिखता तो लेखक महोदय के प्रश्न भी ना उठते। अवश्य ही कुछ नया मौलिक चिन्तन है। नई बात को हृदयंगम करते समय कुछ प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं।

लेखक महोदय ने लेख में कुछ ऐसी बातें भी जोड़ दी हैं जिनका ज़िक्र तक उस सम्मेलन में नहीं हुआ। बात जैसी थी, उसी रूप में लेखनी चलायें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। ❖

अनोखा विश्व परिवार

● **ब्रह्माकुमारी कोमल, बराड़ा, अम्बाला कैन्ट**

जैसे गोवर्धन पर्वत को उठाने में सभी ने अपनी छोटी उंगली का सहयोग दिया तो सहज ही उठ गया, ऐसे ही यदि एकजुट होकर परिवार के रूप में रहें तो बड़े-बड़े कार्य भी सहजता से किए जा सकते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था भी एक परिवार है जहाँ स्वयं परमपिता शिव परमात्मा, प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय तन द्वारा हम मनुष्यात्माओं को एडॉप्ट कर अपना बनाते हैं। तभी गाते भी हैं, ''तुम मात-पिता, हम बालक तेरे''। इस अनूठे विशाल परिवार में सभी धर्म, जाति, वर्ग, सम्प्रदाय व विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्ति हैं लेकिन सभी एक शिव परमात्मा की श्रीमत अनुसार एकमत होकर चलते हैं जिससे ही एकमत वाले राज्य सतयुग, जहाँ राजा-प्रजा एक परिवार के रूप में ही रहते हैं, जहाँ श्री लक्ष्मी, श्री नारायण की मत सर्वमान्य होगी, की स्थापना होनी है। सारे विश्व को एक परिवार के रूप में बांधना ही इस संस्था का लक्ष्य है। यह संभव है परमपिता शिव परमात्मा की इस संगमयुग पर दी जा रही श्रीमत से।

परिवार का मुखिया स्वयं भगवान

जिस प्रकार कमज़ोर धागे से यदि लकड़ी के गट्ठे को बांधा जाए तो धागा भी टूट जाएगा और गट्ठा भी खुलकर बिखर जाएगा। ऐसे ही परिवार का मुखिया यदि भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर है तो परिवार को भी एकसूत्र में बांधकर रखना मुश्किल हो जाता है। फिर परिवार भी टूट कर बिखरने लगता है। इसलिए ज़रूरत है अभिभावक या मुखिया के आध्यात्मिक रूप से सशक्त होने की। ब्रह्माकुमारी परिवार का मुखिया स्वयं परमात्मा शिव सर्वसमर्थ, आलमाईटी अथॉरिटी है, जिस कारण ही यह परिवार दिन प्रतिदिन वृद्धि को पा रहा है। मात्र 76 वर्षों में, 350 सदस्यों से 10 लाख सदस्य हो जाना सफलता नहीं तो और क्या है? इन सभी ने इस परिवार में आकर विकारों को छोड़ने में स्वयं को समर्थ महसूस किया है। कितने गौरव की बात है इस ईश्वरीय परिवार का सदस्य बनना। दुखी आत्माएं एक-दूसरे को सहयोग देकर और परमात्मा पिता से मिलन मनाकर सच्चे सुख व खुशी का अनुभव करती हैं तथा समस्याओं का समाधान प्राप्त कर निजी परिवारिक जीवन को कमल-पुष्प समान व्यतीत करती हैं। आश्चर्य की बात है कि कई कैदी भी अपने व्यवहार में परिवर्तन कर इस परिवार का हिस्सा बने हैं।

परिवार एकमत कैसे बने?

(1) परिवार के प्रत्येक सदस्य को हर बात में अपना उत्तरदायित्व समझना

है, किसी भी परिस्थिति के लिए किसी एक व्यक्ति को उत्तरदायी न मानें।

(2) अपने भीतर प्रत्येक परिस्थिति का सकारात्मक उत्तर पाने का सामर्थ्य जगाएँ। प्रत्येक समस्या के अंदर अवसर के बीज़ छिपे रहते हैं और इन बीजों को अंकुरित कर हम एक बेहतर स्वस्थिति व अवसर रूपी फल तैयार कर सकते हैं। यह संभव है आध्यात्मिकता द्वारा अन्तर्मुखी दृष्टिकोण अपनाने से।

(3) मुखिया या अभिभावक को भी चाहिए कि वह साक्षी, न्यारा-प्यारा होकर परिवार को चलाए। किसी भी समस्या को सुलझाने के लिए उससे परे होकर, न्यारे होकर ही हम उसके वास्तविक रूप को समझकर, सही निर्णय ले सकते हैं और सभी को संतुष्ट कर सकते हैं।

(4) बालक व मालिक का बैलेंस रखें। जहां ज़रूरत है मालिक बनकर राय दें, यदि आधुनिकता के दौर के कारण, उसे नहीं माना जाता तो बच्चा बन जाएं। बच्चा बनने से बोझिल होने से बच जाएंगे।

(5) अभिभावक का नियंत्रण व सही रवैया भी आवश्यक है। अधिक ढील देने से डोर टूटने का संशय बना रहता है।

(6) परिवार में एकता के लिए ज़रूरी है यह मन्त्र, एक ने कहा, दूसरे ने माना। झुकने में ही महानता है। आँधी-तूफान आने पर बड़े-बड़े पेड़ गिर जाते हैं तथा छोटे-छोटे पौधे झुक जाने के कारण ही बच जाते हैं।

(7) याद रखिए, ''झुकता वही है जिसमें जान होती है, अकड़े रहना मुर्दे की पहचान होती है।'' माला का मणका गायन व सिमरण योग्य तभी बनता है जब वह सभी दानों के साथ परस्पर जुड़ा है। यदि समाज में गायन योग्य बनना है तो परिवार में परस्पर जुड़ें रहें। ❖

शिव-स्मृति में है सुरक्षा

● ब्रह्माकुमार हरीश, शान्तिवन

परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि समय बहुत कम है। अचानक कुछ भी हो सकता है, अंतिम घड़ी कभी भी आ सकती है इसलिए हमेशा उसके लिए तैयार रहना चाहिए। बाबा ने जो याद का अभ्यास बताया है, उसे करते रहें, तो अंत मति सो गति हो जायेगी।

एक बार एक भयानक दुर्घटना हुई। बाबा के हम पांच बच्चे – दार्जिलिंग के देवराज भाई, सिक्किम के सूरज भाई, मैं, दार्जिलिंग की छोटी कन्या योगिता, उसकी बुआ श्रीजा बहन, 1 जुलाई 2012 को सुबह के समय दार्जिलिंग से कालिंगपोंग (वेस्ट बंगाल) ईश्वरीय सेवा के लिए जा रहे थे। गाड़ी में बैठे हुए सिर्फ यह याद था कि हम बाबा की सेवा के लिए जा रहे हैं। दार्जिलिंग से 25-28 किलोमीटर आगे तिस्ता नदी के पास जैसे ही गाड़ी (टाटा इण्डिका) ढलान से नीचे की ओर सड़क पर आगे बढ़ी (गति 40-50 किलोमीटर/घंटा) तो ब्रेक फेल हो गए। मैं गाड़ी की पिछली सीट पर आँखें बंद करके आराम कर रहा था। अचानक शोर सुनकर आँखें खोलीं तो देखा, गाड़ी बहुत तेज गति से ढलान की तरफ जा रही है। गति लगभग 115 से 125 किलोमीटर/घंटा हो गई थी। मैंने सूरज भाई (जो गाड़ी चला रहा था) को गति कम करने के लिए कहा, उसने बताया कि गाड़ी की ब्रेक फेल हो गई है। मैंने हैंड ब्रेक लगाने के लिए कहा लेकिन गाड़ी इतनी तेज थी कि हैंडिल संभालना ही मुश्किल हो रहा था। उसी समय मैंने बाबा को कहा, बाबा, आप ही संभालो। तुरंत टचिंग आई कि हैंड ब्रेक खींचो और मैंने पिछली सीट से हैंड ब्रेक खींच दिया। हैंड ब्रेक खींचते ही गाड़ी चारों पहियों पर घिसटती हुई आगे की तरफ बढ़ी। चालक को समझ ही नहीं आ रहा था कि यह क्या हुआ।

सड़क के एक तरफ गहरी खाई, दूसरी तरफ पहाड़ी तथा थोड़ा आगे अन्य खाई थी। गाड़ी 50 मीटर आगे पहाड़ से टकराकर, फुटबाल की तरह उछलकर उल्टी होकर 25-30 मीटर घिसटती गई। जैसे ही गाड़ी टकराकर उछली, मैंने आँखें बंद कर बाबा का आह्वान किया कि बाबा, हम आपके पास आ रहे हैं। गाड़ी रुकी, आँखें खोली तो देखा यह उल्टी पड़ी है। हमने जल्दी से जल्दी छोटी बच्ची को खिड़की से बाहर निकाला, फिर दूसरी बहन को निकाला, फिर मैं स्वयं निकला। दोनों भाई जो आगे की सीट पर बैठे थे, अभी भी फंसे हुए थे। तब तक कुछ लोग और भी आ गये। सबने मिलकर गाड़ी को सीधा किया और उन दोनों भाइयों को बाहर निकाला। सभी को चोटें आई थीं। दोनों भाइयों से चला भी नहीं जा रहा था। हमने बाबा का धन्यवाद किया। बाबा ने सूली से कांटा बनाकर हम बच्चों को बचा लिया। गाड़ी चारों तरफ से टूट गई थी। जो भी देखता, यही कहता, कमाल हो गया, आप इस गाड़ी में कैसे बच गये? यह बाबा की कमाल रही। बाबा की याद ने हमें बचा लिया। अनायास ही दिल से निकला, जाको राखे साईया मार सके ना कोई। ❖

जीवन परिवर्तन

● प्रदीप कुमार सिंह, ज़िला कारागार, गोरखपुर

मेरे अपराध की पृष्ठभूमि का मुख्य कारण यह रहा कि मात्र 15 वर्ष की आयु में मैंने 5 लोगों का एक ही रात में संहार देखा। इस नरसंहार ने मेरी सोच को प्रतिशोध का रूप दे दिया। इसके बाद मैं बदले की भावना में जलता रहा। सन् 1988 में गैंगस्टर के मुकदमे सहित 10 मुकदमे मेरे खिलाफ लगाये गये। फिर जेल में रहा। अप्रैल 1989 में रिहा हुआ। प्रतिशोध में मेरे द्वारा फिर दर्जनों हत्यायें हुईं। पुलिस प्रशासन ने मुझे पकड़ने के लिए पचास हज़ार रुपये का पुरस्कार रखा। सन् 2005 में एक हत्या, जो गोरखपुर कचहरी में मेरे द्वारा हुई, उसके बाद से जेल में हूँ।

आत्म अभिमान से क्रोध पर नियंत्रण

जेल आने पर पता चला कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का क्लास यहाँ चलता है। मैंने क्लास में जाना शुरू किया। जेल में ही सहज राजयोग का साप्ताहिक कोर्स किया और उसके बाद मुरली (परमात्मा के महावाक्य) सुनना और मुख्य-मुख्य प्वाइंट नोट करना शुरू किया। वहीं से मेरे जीवन में अनेक सार्थक संकल्प जगे। साथ ही यह भी आभास हुआ कि शाश्वत मूल्यों की विद्या यही ज्ञान है। योग के माध्यम से सादगी, सरलता तथा सद्भाव का जन्म हुआ। अहंकार भी जाने लगा। आत्म-अभिमान से क्रोध नियंत्रण की अलौकिक शक्ति मिलने लगी।

सेवाभाव जगा

गोरखपुर सेवाकेन्द्र के निमित्त बहन-भाइयों की सेवाभावना को देखकर मेरे मन में यह संकल्प जगा कि समाज की व विश्व की सभी आत्मायें भाई-भाई हैं, सभी के प्रति सेवा की भावना रखनी है। ईश्वरीय ज्ञान से मैंने सीखा, सभी आत्माओं का सम्मान करना है, मन-वचन-कर्म से बाबा (परमात्मा) की श्रीमत का अनुसरण करना है। साथ ही योग और ज्ञान की युक्ति से याद की यात्रा में रहकर माया के प्रबल शत्रुओं द्वारा होने वाले वार से निजात मिलेगी। सहज राजयोग केन्द्र में आने से अनुभव हुआ कि क्रोध मूर्खता का अभिन्न सहयोगी और विवेक का अवरोधक है। सहज राजयोग तभी धारण कर पायेंगे जब विवेक और वैराग्य की पूंजी रहेगी।

बदलाव बनाये रखना है

सबसे बड़ी कमज़ोरी मेरा क्रोध रहा, वही मेरे दुष्कर्मों का सबसे बड़ा कारण है। अब मुझे दृढ़ निश्चय हो गया है कि क्रोध का पूर्ण त्याग कर सभी आत्माओं को भाई-भाई की दृष्टि से देखना है। सबकी सेवा में तत्पर रहना है। जेल से बाहर जाने पर ऐसा बदलाव अपने में बनाये रखना है। अब बदला नहीं लेना बल्कि बदलकर दिखाना है। बाबा के प्रति यही गीत गाता हूँ, बाबा आपने कमाल कर दिया, मेरा सारा जीवन खुशहाल कर दिया। मेरे ऊपर शिवबाबा की बहुत बड़ी कृपा है। निमित्त भाई की अनुपस्थिति में मैं मुरली क्लास भी कराता हूँ। वर्तमान समय लगभग 80 कैदी भाई क्लास कर रहे हैं। ❖

बाबा की आँखें

ब्रह्माकुमार बादल सिंह, रीवा

बड़ी खूबसूरत बाबा की बातें,
बसी मेरे दिल में बाबा की आँखें।

मैं भटका हूँ जब भी रहगुज़र में,
दिखाती हैं रास्ता बाबा की आँखें।

न जाने कहाँ से ये उतरी यहाँ पर,
नहीं इस जहां की बाबा की आँखें।

चढ़ी है खुमारी इन्हें जब से देखा,
नशीली हैं कितनी बाबा की आँखें।

वही पार होता है सागर से दुख के,
डुबोती हैं जिनको बाबा की आँखें।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org